सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 9è-
वार्षिक	रु0 100è-
विशेष वार्षिक	रु0 500è-
विदेशों में (वार्षिक)	रु0 25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoin Computers- 9838644687

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

फरवरी, 2009 वर्ष 7 अंक 12

बन्दगी खुदा की

मग़रूर क्यों है इतना
नादान होश में आ
कर ले यक़ीन दिल से
तू ख़ाक का है पुत्ला
ये हाथ पांव तेरे
तिनके का हैं सहारा
देता है रिज़्क़ तुझको
परवर्दगार तेरा
कर बन्दगी खुदा की
बन्दा है तू खुदा का

(गुम नाम शाअ़िर)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

हज्ज का सफर तब और अब	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
इस्लामी अकाइद	मौ0 मुजीबुल्लाह नदवी	9
कारवाने ज़िन्दगी	मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी	10
सफाई सुथराई और उसके आदाब	अल्लामा सै0 सुलैमान नदवी	13
हम कैसे पढ़ायें	डॉ0 सलामतुल्लाह	15
इक्कीसवीं सदी और आलमे इस्लाम	समीअ सुलतानपुरी	17
तस्वीर का दूसरा रुख़	वहीद अशरफ	19
इसराईल साम्राज्यवाद का एक असली चेहरा	मियां अली रजा	20
इस्लाम का नज़रिय–ए–जंग, हयाते नबवी के हवाले से	मौ0 अली रजा मिस्बाही	22
मानव शरीर :कुछ तथ्य	डॉ0 राजीव लोचन	26
कुर्आन की पारिभाषिक शब्दावली	डा0 मु0 अहमद	27
हम और हमारा शरीर	डा0 मुजफ़्फ़र अली	29
जग नायक हजरत मोहम्मद स0		30
आप के प्रश्नों के उतर	इदारा	31
सिविल सर्विसेज में जाने का अवसर	एम0 हसन अन्सरी	34
समाज सुधार	एम0 हसन अन्सरी	18
भारत का सक्षिप्त इतिहास	सैयद अबू ज़फर नदवी	35
इस्लाम में लोकतंत्र	उबैदुर्रहमान नदवी	37
तपता (अलाव)	मुहम्मद दानिश अंसारी	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ	40

ह़ज्ज का सफ़र तब और अब

-डा. हारून रशीद सिद्दीक़ी

अब तो शाज़ व नादिर ही कश्ती से सफ़र होता है, पहले बैल गाड़ियों और ऊटँ गाड़ियों से भी सफर हुआ करते थे, कहते हैं जब पक्की सड़कें न थीं, रेलवे लाईनें न थीं तो ह़ज्ज पर जाने वाले, मुल्क के कोने कोने से अपने को समन्दर के साहिल पर पहुंचाते, फिर वहाँ से बादबानी कश्तियों से जद्दे को रवाना होते, मशहूर बन्दर गाहें कराची, बम्बई और कलकत्ता थीं, इन बन्दर गाहों पर पहुंचना भी आसान न था, बैल गाड़ी घोड़ा गाड़ी या घोड़ों और ऊंट के काफ़िले चलते थे। हर मुसाफ़िर छे महीनों से ज़ियादा का ज़ादे सफ़र ले कर चलता, कभी कभी क़ाफ़िले लुट भी जाया करते थे। मगर ज़ियारते ह़रमैन के मतवाले इन तमाम मुशकिलात में जिहाद का सवाब समझते हुए बख़ुशी झेलते थे, हर ह़ाजी पर अदाएगीय फ़र्ज़ से ज़ियादा ज़ियारत का शौक़ ग़ालिब रहता था।

बन्दरगाह पहुंच कर जहाज़ वालों से बराह रास्त मुआमला करना पड़ता था, पहले तो बादबानी काश्तियों से सफ़र होता, कई महीनों में जददा पहुंचना होता, जब इंजिन वाले जहाज़ चले तो वह भी लम्बे रास्ते से जाते और एक एक महीने में जददा पहुचाते, फिर तरक़्क़ी होती गई और भारी जहाज़ बीच समन्दर से गुज़र कर एक हफ़्ते में जद्दा पहुंचाने लगे। इन जहाज़ों का सफ़र भी कुछ मिज़ाजों को तो बीमार ही डाला देता, हल्की मतली और क़ै से तो कोई न बचता।

जद्दा पहुंच कर भी पहले जद्दे से मक्का, फिर मक्के में, मिना, अ़रफ़ात, मुज़दलफ़ा जाना मेह़नत का काम था। फिर ह़ज्ज करके मक्के से मदीना ऊंटों पर जाया जाता था रास्ते में कभी बददू लोग हाजियों का क़ाफ़िला लूट लेते, कभी ह़ाजियों की जानें भी जातीं। फिर तरक़्क़ी हुई मक्का और मदीने के बीच सड़कें बनीं, जद्दा से मक्का और मक्का से मदीना लारियां और मोटरें चलने लगीं जिस से ह़ाजियों को सुहूलतें मिलने लगीं।

अंग्रज़ी दौर में अपने मुल्क में भी पक्की सड़कें बनीं, रेलवे लाइनें बिछीं, मोटर और रेल से सफ़र होने लगे, ह़ाजी लोग कराची, बम्बई और कलकत्ता पहुंच कर ह़ज्ज का सफ़र करने लगे। यह रेल और मोटर के सफ़र भी कुछ आसान न थे लेकिन ज़ियारते ह़रमैन के शैदाई ज़बाने ह़ाल से यही कहते थे :

न घबरा जोशे तुफां से ख़ुदा पे छोड़ कश्ती को
पहुंच ही जाएंगे ऐ दिल अगर क़िस्मत में साहिल है

यह सारी बातें तब की थी मगर अब तो साइंस इन्सानों को तरक़्क़ी की राह पर तेज़ दोड़ा रही है और नहीं मालूम कि किस मंज़िल पर पहुंचा के दम लेगी।

अब न गर्द व ग़ुब्बार वाली सड़कें हैं न कोयले से चलने वाली रेलें हैं, चिकनी सड़कें, एयर कन्डीशन बसें, आराम देह ट्रेनें, जहां चाहिये आराम से पहुंचये, लेकिन अब तो पानी के जहाज़ के झटकोलों से भी छुटकारा मिल गया, अब तो अपने क़रीबी शहर के एयर पोर्ट पर हवाई जहाज़ से सवार होइये और चार छे घन्टों में मदीना तय्यिब या जद्दा उतर जाइये, जद्दे से एयर कनडीशन बस आप को मक्के के किसी होटल में पहुंचाए गी, अब आप उ़म्रा करें, ह़ज्ज करें। अलबत्ता मक्के की क़ियाम गाहें पहले मशरिक़ी तहज़ीब में ढली होती थीं अब उन पर मग़रिबी तहज़ीब का ग़लबा है। कुर्सी पर बैठ कर क़ज़ाए ह़ाजत कीजिये, कैन्टीन में खाना खाइये, कुछ लोग किसी किसी वक़्त खाना पकाने का भी एहतिमाम कर लेते हैं मगर अक्सरीयत कैन्टीन ही में खाती है।

इबादात में भी तब और अब में ख़ासा फ़र्क़ हुआ है, पहले ह़ाजियों की तअ़दाद कम होती थी, मस्जिदे

हराम में तवाफ़ में तो औरतों और मर्दों का इख़्तिलात रहता, मगर नमाज में औरतें एक जानिब हो जाती, अब हाजियों की कसरत के सबब मुहाज़ात से मफ़र नहीं, शवाफ़िअ व हनाबिला जिन के यहाँ औरत के मस से वुज़ू ही नहीं रहता था अब सभी औरतों के मुहाजात को बर्दाश्त कर रहे हैं और शायद ही कोई नमाज़ दुहराता हो। बअ़ज़ औरतें भी इस पर जरी हैं। देखा गया कि दो तीन पाकिस्तानी औरतें नमाज़ के वक़्त मर्दों के मजमूअे में आ बैठीं एक पाकिस्तानी ने उन को टोका और मुतालबा किया कि औरतों के मजूमअे में चली जाएं तो मर्दों की नमाज़ न ख़राब होगी, जवाब मिला तुम्हारी चौधराहट पाकिस्तान ही में चलेगी हरम में नहीं चलेगी। तवाफ़ में तो औरतों का इख़्तिलात ज़रूर रहता है मगर औरतें मर्दों के दबाव से महफ़ूज़ रहती हैं लोग एहतियात करते हैं। लेकिन रमीये ज़मरात में तो बुरी तरह पिस जाती हैं।

रमीये जमरात अब कई मंज़िला है लेकिन ज़ियदा दबाव ग्राउन्ड ही पर रहता है। कुछ सालों पहले रमीये जमरात पर मौतें हुई थीं इस लिये अब हाजियों की कियाम गाहों पर एअ़लान लगा होता है कि रमी 24 घन्टे की जा सकती है, जब कि 11, 12 की रमी बअ़द ज़वाल पर इत्तिफ़ाक़ है और क़ब्ल ज़वाल की रमी पर दम वाजिब होता है लेकिन बड़ी तअ़दाद 11, 12 को भी क़ब्ल ज़वाल रमी करती है और उलमा खामोश हैं। कुछ लोगों का कहना है कि सऊ़दी उलमा ने 11, 12 को क़ब्ल ज़वाल रमी का फ़त्वा दिया है, मगर यह फ़त्वा नज़र से नहीं गुज़रा।

हाजियों की कसरत ही के सबब मुअ़ल्लिम लोग मिना से अरफ़ात की सुब्ह को तुलूअे आफ़ताब के बअ़द पहुंचाने के बजाए तुलूअे सुब्ह सादिक़ से पहले रात ही में पहुंचा देते हैं। इसी तरह 12 को मिना से मक्का लौटने के लिये पैदल चलने वालों से सड़कें इतनी भर जाती है कि मुअ़ल्लिम की गाड़ियों को मग़रिब से पहले मिना में दाख़िला नही मिलता मजबूरन बूढ़े और मअ़ज़ूर लोगों को भी 12 को मग़रिब से पहले मिना छोड़ने के लिये पैदल चलना पड़ता है। अल्लाह तआ़ला सऊ़दी हुकूमत को जज़ाए खैर दे और उसे दीन पर इस्तिक़ामत के साथ दवाम बख़्शे उसने हरमैन शरीफ़ैन की जो ख़िदमात की हैं उस के बयान की लिये एक दफ़्तर चाहिये उस ने हरमैन शरीफ़ैन को जो वुसअत दी है वह हैरत अंगेज़ है इस के बावजूद हाजियों की कसरत ने उसे तंग कर दिया और एक भारी तअ़दाद बाहरी मैदान में तेज़ धूप में नमाज़ अदा करती नज़र आती है।

मदीना तैयिबा की ज़ियारत बहुत से हाजियों को हज्ज से पहले और बहुतों को हज्ज के बअ़द कराई जाती है। अल्ललाह का शुक्र व एहसान है कि वहाँ की क़ियाम गाहों में क़ज़ाए हाजत के लिये मशरिकी तहज़ीब के कदमचे भी हैं। और मुसिन बुज़र्गों नीज़ मअ़ज़ूरों के लिये कुर्सी वाले पाख़ानों का भी नज़्म है। मस्जिद में औरतों की नमाज़ की जगह बिल्कुल अलग है, इख़्तिलात का कोई सुवाल नहीं, हरमे मक्की में चूंकि तवाफ़ से किसी को रोका नहीं जा सकता इस लिये हाजियों की मौजूदा कसरत के सबब औरतों को अलैहदा करना मुम्किन नहीं।

इधर कई साल से हाजियों की कसरत के सबब इन्तिज़ाम में जो दुशवारियां आ रही हैं उन के पेशे नज़र मुसलमानों को चाहिये कि नफ़्ल हजों पर कन्ट्रोल करें इन्शा अल्लाह सवाब मिलेगा।

बेशक हज्ज कमेटी के कारकुन बड़ी मेहनत करते हैं, अल्लाह उनको जज़ाए खैर से नवाज़े लेकिन फिर भी नज़्म व ज़ब्त और काम का तरीक़ा नज़रे सानी का मुहताज है। मेरी यह बात कोई क़ीमत नहीं रखती लेकिन हो सकता कोई अल्लाह का बन्दा हज्ज कमेटी वालों को अपने काम के तरीक़े पर नज़रे सानी करने पर आमादा कर सके।

इसी तरह अल्लाह मुअ़ल्लिमो के दिल में बात डाले और वह भी तव्ज्जुह करें। मिना के ख़ेमों में हर हाजी को सोने के लिये सिर्फ़ दो बालिश्त जगह देना किसी तरह मुनासिब नहीं। क्या सऊ़दी लोग इतनी तंग जगह में सो सकेंगे? इसी तरह हर हाजी को औरत हो या मर्द कुर्सी पर बैठ कर क़ज़ाए हाजत करने पर मजबूर करना किसी तरह मुनासिब नहीं।

❑❑

क़ुरआन की शिक्षा

— मौलाना मु. मन्ज़ूर नोमानी

तर्जमा :– ऐ इमान वालो! हो जाओ खूब इन्साफ पर कायम रहने वाले, और इन्साफ की हिमायत करने वाले, और अल्लाह के लिये सच्ची गवाही देने वाले, अगरचे (वह इन्साफ और वह गवाही) तुम्हारे ही खिलाफ़ पड़े, या तुम्हारे माँ–बाप और दूसरे सम्बंधियों के खिलाफ पड़े, अगर संबंधित पक्ष धनवान हैं या मुहताज (दोनों शक्लों में) अल्लाह तआला तुम से जियादा उन का खैरखाह (हित चिंतक) है। पस तुम इन्साफ करने में अपने नफ़्स (स्वार्थ) की पैरवी न करो। अगर तुम (किसी की रिश्तेदारी या अमीरी–गरीबी के लिहाज से फैसले में या गवाही में) लाग–लपेट या एच–पेच की बात करोगे या खुदा लगती (सच्ची) बात कहने से बचोगे तो यकीन रखो कि अल्लाह तुम्हारे अमलों से पूरी तरह खबरदार है। (अन्निसाअ :135)

अद्ल व इन्साफ़ के बारे में यह आयत कितनी जामे और कैसी मोहकम (दृढ़) और वाजेह (स्पट) है। फर्माया गया है कि व्यवहार में अद्ल व इन्साफ को और सच्ची खुदा लगती बात कहने को अपना उसूल और नसबुल् ऐन (नियम व सिद्धान्त) बना लो। और पूरी दियातनदारी और लिल्लाहियत के साथ इस फर्ज़ को अदा करो, चाहे इस से खुद तुम को या तुम्हारे रिश्तेदारों को कितना ही नुक्सान पहुँचे। लेकिन अल्लाह के मुकाबले में और सच्चाई व इन्साफ के मुआमले में किसी की जानिबदारी (पक्षपात) न करो। न किसी अमीर की अमीरी (धन दौलत) की वजह से उस की तरफदारी करो और न किसी गरीब की गुर्बत (निर्धनता) व नादारी पर रहम खा कर उस की बेजा (अनुचित) हिमायत करो। इन्साफ और सच्चाई सब से मुकद्दम (सर्व प्रथम) है। गरीबों की गरीबी को भी अल्लाह तआला तुम से जियादा देखने वाला है, और वही सब का हक़ीकी मालिक और कर्ता–धरता है। आखिर में यह भी फर्माया कि किसी एक फरीक (पक्ष) की या दोनों फरीकों की नाराजगी से बचने के लिये बात लगी लिपटी और एच–पेच वाली भी न कही जाये और फैसले और गवाही से पहलू तही (बचना) भी न की जाये। ये दोनो बातें भी अद्ल व इन्साफ के खिलाफ और गुनाह हैं।

आखिर में एक आयत सूरए माइदह की और पढ़ लीजिये, जिस में अद्ल व इन्साफ के हुक्म के साथ यह भी ताकीद फर्मायी गयी है कि अगर कुछ लोग तुम्हारे दुश्मन और बदखाह (बुरा चाहने वाले) हों तब भी उन के साथ इन्साफ ही करो इर्शाद है :–

तर्जमा :– ऐ इमान वालो! हो जाओ खड़े होने वाले अल्लाह के लिये, कहने वाले अद्ल व इन्साफ के साथ खुदा लगती और लोगों की अदावत व बदख़्वाही तुम को इस गुनाह के करने पर आमादा न कर दे (यानी किसी दुश्मनी से प्रभावित होकर तुम ऐसे न हो जाओ) कि उन के साथ बे इन्साफी करने लगो, (तुम हर हाल में) इन्साफ ही करते रहो, यही (बात) तक़्वा के क़रीब है। (अलमाइदहः8)

ऊपर की आयतों मे यह ताकीद फ़र्माई गयी थी कि अपने व्यक्तिगत नफ़ा व नुक़्सान के खियाल से , या रिश्ते दारी की वजह से या किसी की अमीरी के लिहाज से या किसी की ग़रीबी पर तर्स खा कर उसे फायदा पहूँचाने की नियत से कोई बे इन्साफ़ी और जानिबदारी न की जाये। बल्कि सिर्फ़ खुदा की खुशनोदी के लिये और सच्चाई का हक़ अदा करने के लिये हर मुआमले में अद्ल व इन्साफ किया जाये, और बात सच्ची और खुदा लगती कही जाये। अब सूरए–मॉइदह की इस आयत में यह फ़र्माया गया कि किसी दुश्मन की दुश्मनी की वजह से भी उस के साथ बेइन्साफ़ी न की जाये। बल्कि उस की दुश्मनी और बदखाही के बावजूद मुआमलात में उस के साथ

पूरा इन्साफ किया जाये, और किसी मुआमले में वह हक़ पर हो तो उस की हिमायत की जाये और उस के हक में फैसला दिया जाये। यह है कुर्आने मजीद की दावत व तालीम, अद्ल व इन्साफ़ के बारे में।

काश! अगर मुसलमानों में यही एक बात मौजूद होती तो इस में शक की गुन्जाइश नहीं कि अल्लाह तआला इस दुन्या का इन्तिजाम आज भी इन्हीं के हाथों में देता और मुसीबत–जदा दुन्या इन्हीं को सरबराही के लिये चुन लेती।

समाहत व सखावत

जिन अख्लाकी नोकियों पर कुर्आने–मजीद में खास तौर से जोर दिया गया है उन में से एक समाहत व सखावत भी है। जिस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने किसी बन्दे को जो दौलत व कुव्वत और जो नेमत इस दुन्या में दी है वह उस से खुद ही फ़ाइदा न उठाये, बल्कि अल्लाह के दूसरे बन्दों पर भी उस को खर्च करे और उस से उन को फाइदा पहुँचाये। इस का दाइरा (कार्यक्षेत्र) जाहिर है कि बहुत ही फैला हुआ है और बन्दगाने–खुदा की खिदमत और इआनत (सहायता) की तमाम ही चीजें इस में शामिल हो जाती हैं। दूसरे जरूरत मंदों पर अपनी दौलत खर्च करना, अपने इल्म–व–फ़न और अपनी काबलियत (पात्रता) से उन की कोई खिदमत करना, खुद तकलीफ उठा कर उन के काम कर देना, और जिस मदद के वे मोहताज हों अपने वसायल (साधनों) से उन की वह मदद करना ये सब शक्लें समाहत व सखावत ही की शाखें हैं। और कुर्आने–मजीद ने उस को बुन्यादी नेकी करार दिया है और अलग –अलग उन्वानों से उस की तरगीब दी है। सूरए–बक्रह् के पहले ही रूकूअ् में (जिस को कुर्आने–मजीद का तमहीदी हिस्सा (प्रस्तावना)कहना सही है), कुर्आनी हिदायत से फायदा उठा कर कामयाब होने वाले लोगों की जो बुन्यादी सिफ़तें बयान की गयी हैं उन में से एक यह भी है कि :–

तर्जमा :– और हम ने जो कुछ उन को दिया है वे उस में से (हमारी राह में दूसरे बन्दों पर भी) खर्च करते हैं।(अलबकरह :3)

मुफ्स्सिरीन ने लिखा है कि माल व दौलत के अलावा जो खुदादाद (खुदा द्वारा प्रदानित) कुव्वत व ताकत, काबलियत और मेहनत वग़ैरा, अल्लाह के बन्दों को फाइदा पहुँचाने के लिये खर्च की जाये, वह सब भी इस में दाखिल है। फिर इसी सूरए–बक्रह के आखिरी हिस्से में एक जगह इर्शाद फर्माया गया है :–

तर्जमा :– ऐ ईमान वालो! हम नें जो कुछ तुम को दिया है उस में से (हमारी राह में दूसरों पर भी) खर्च करो, इस से पहले कि (क़ियामत का) वह दिन आजाये जिस में न कोई खरीद व फरोख्त होगी, न किसी यार (दोस्त) की यारी न किसी की सिफारिश काम आयेगी।(अलबकरह :254)

और तीन रूकूअ् बाद इसी सूरए बक्रह में राहे–खुदा मे अपनी दौलत व ताकत खर्च करने की तरगीब देते हुये उस के फाइदे और उसके अज्र व सवाब के बारे में फर्माया गया है:–

तर्जमा :– और जो अच्छी चीज तुम (अल्लाह के बंदो पर) खर्च करोगे उस का नफा और सवाब तुम ही को पहुँचेगा, और तुम्हारा खर्च करना अल्लाह ही के वास्ते होना चाहिये, और जो अच्छी चीज भी तुम खुदा के रास्ते में खर्च करोगे, तमको उस का पूरा–पूरा बदला मिलेगा और तुम्हारी कोई हक–तलफी न होगी।

एक दो आयतों के बाद फिर इर्शाद हुआ है :–

तर्जमा :– जो बन्दे खर्च करते हैं (अल्लाह की राह में दूसरों पर) अपना सरमाया (धन–पूंजी) रात में और दिन में खुफ़्या और अलानिया, पस उन के वास्ते उन के रब के हाँ (जन्नत में) उन का अज्र है (जो उस करीम रब की शान के लाइक है) और (उन का हाल यह होगा कि) न उन्हें कोई खौफ़ होगा और न वे गमगीन होंगे।(अलबकरह : 274)

खुदा के रास्ते में, अल्लाह के दूसरे बन्दों पर अपनी चीजें खर्च करने की तरगीब के सिल्सिले में एक बात कुर्आने–मजीद ने यह भी कही है कि इस राह में खर्च करने वाला जितना खर्च करेगा अल्लाह की तरफ से उस का सैकड़ों गुना उस को दिया जायेगा। इसलिये इस राह में खर्च करना मानो एक बहुत ही फाइदा देने वाली तिजारत और एक ऐसी खेती है जिस से एक–एक दाने के बदले में सैकड़ों हजारों दाने काश्तकार को हासिल होते हैं।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तसनीम

ग़नी वह है जो दिल का गनी है।

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमया, खुशनसीब है वह, जो इस्लाम लाया और जरूरत भर सामान रखता है। और जो कुछ अल्लाह ने उसको दिया उसपर वह कानिअ़ है।

(मुस्लिम)

एक सहाबी का किसी से कुछ न लेने का अह्द और उसकी पाबन्दी

हजरत हकीम (र0) बिन हिजाम से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया, आपने मुझे दिया, मैंने फिर माँगा, आपने दिया और फरमाया, ऐ हकीम, यह माल सरसब्ज है। जो इसको बेपरवाही के साथ लेगा तो इसमें बरकत होगी। और जो नफ्स की तमअ के साथ लेगा तो बरकत न होगी। और यह ऐसी मिसाल है कि एक आदमी खाता है और सेर नहीं होता और ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है। मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह! उस जात की कसम जिसने आपको हक के साथ नबी बनाकर भेजा है। मैं जिन्दगी भर आपके बाद किसी से कुछ शै लेकर माल में कमी न करूँगा।

हजरत अबू बक्र (र0) अपनी खिलाफत के जमाने में हजरत हकीम (र0) को बुलाते थे और उनको कुछ देना चाहते थे तो वह इन्कार करते थे। फिर हजरत उमर (र0) ने अपने जमाने खिलाफत में उनको दिया। उन्होंने उनसे भी इन्कार किया। हजरत उमर (र0) ने कहा, ऐ मुसलमानो! मैं तुमको हकीम के मुआमले में गवाह करता हूँ कि मैं इनको वह हक देता हूँ जो माले गनीमत में इनके लिए रक्खा है। और यह इन्कार करते हैं।

हजरत हकीम (र0) ने नबी (स0) के बाद वफात पाने तक किसी से कुछ नहीं लिया।

(बुखारी—मुस्लिम)

हजरत अबू मूसा (र0) का अपने जिहाद का तजकिरः करके पशीमान होना

हजरत अबू बरदः (र0) से रिवायत है कि अबू मूसा (र0) अश्अरी फरमाते हैं कि एक ग़ज़्वः में हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ गये। एक ऊँट था उसपर यके बाद दीगरे सवार होते थे। लोगों के पाँव में सूराख हो गये, और मेरे पाँव के तो नाखून तक गिर गये थे। तो हम लोगों ने पैरों पर चीथड़े बाँध लिये। इसलिए उस ग़ज़्वः का नाम जातुर्रिकाअ़ रख दिया। हजरत अबू बरदः (र0) कहते है कि यह वाकिअ़ः बयान करके अबू मूसा (र0) को अफसोस हुआ कि मैंने यह तज़किरः क्यों किया। गोया उन्होंने अपने नेक अमल को जाहिर करना नापसन्द किया।

(बुखारी—मुस्लिम)

दिल के ग़नी

हजरत अम्र (र0) बिन तग़लिब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास माल या कैदी आये। आपने इस तरह तकसीम किया कि बाज को दिया और बाज को नहीं दिया। बाद में आपको खबर मिली कि जिनको नहीं दिया वह नाराज़ हैं। आपने अल्लाह की तारीफ और सना बयान की; फिर फरमाया, खुदा की क़सम मैं बाज को देता हूँ और बाज को नहीं। वह मुझे जियादः महबूब है उस शख्स से जिसको देता हूँ। लोगों को उस वक्त देता हूँ। जब उनके दिलों मे घबराहट और बेचैनी पाता हूँ; जिनको नहीं देता, उनको इस इतमीनान पर नहीं देता कि अल्लाह तआला ने उनका दिल गनी कर दिया है और ख़ैर रक्खी है। उन्हीं में अम्र बिन तगलिब हैं। अम्र बिन तगलिब कहते हैं, खुदा की क़सम मुझे हुजूर0 (स0) की यह बात सुर्ख ऊँटों से जियादः महबूब है।

(बुखारी)

ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है

हजरत हकीम (र0) बिन हिजाम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है। और खर्च की इब्तिदा उससे करो जिसके तुम जिम्मेदार हो और बेहतर सदका वह है जो अपने लिए जरूरत रखकर दिया जाये। और जो खुद्दार रहना चाहेगा, अल्लाह उसको खुद्दार रक्खेगा। जो गनी रहना चाहेगा, अल्लाह उसको गनी रक्खेगा।

(मुस्लिम)

किसी से सवाल न करने पर बैअत

हजरत औफ़ (र0) बिन मालिक अशजिअी से रिवायत है कि हम आठ नौ आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर थे। आपने फरमाया, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हाथ पर बैअत क्यों नहीं करते ? हमने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! हम तो आपके हाथ पर अभी अभी बैअत कर चूके हैं। फिर आपने फरमाया, तुम लोग रसूलल्लाह से बैअत क्यो नहीं करते ? हमने अपने हाथ फैला दिये और अर्ज किया या रसूलल्लाह ! हम तो आपके हाथ पर बैअत कर चुके हैं, अब किस बात पर करें। आपने फरमाया , इस बात पर कि अल्लाह की इबादत करोग। उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओगे। पाँचों नमाज का खयाल रक्खोगे, अल्लाह की इताअत करोगे, और एक बात चुपंके से कही वह यह कि लोगों से कुछ न माँगोगे। (रावी कहते हैं) मैंने उन्हीं में से बाजों को देखा है कि अगर उनका कोड़ा भी गिर जाता था तो वह किसी से उठाने को नहीं कहते थे, कि यह भी सवाल में दाखिल है।

(मुस्लिम)

सायल के चेहरे पर कियामत में गोश्त न होगा

हजरत इब्नि उमर (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, बाज आदमी बराबर सवाल करते रहते हैं। यहाँ तक कि अल्ला तआला के सामने ऐसी हालत में हाजिर होंगे कि उनके चेहरे पर गोश्त का टुकड़ा न होगा।

(बुखारी–मुस्लिम)

हजरत इब्नि उमर (र0) से रिवायत है कि रसूलुललाह (स0) मिम्बर पर तश्रीफ लाये। सदका और सवाल से बचने को फरमाया और फरमाया, ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है, ऊँचा हाथ नीचे हाथ से बेहतर है ऊँचा हाथ देने और नीचा हाथ लेने वाला होता है।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

जमा करने के लिए माँगना

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो लोगों से जमा करने के लिए माँगता है वह आग की चिनगारी माँगता है। उसको इख्तियार है जियादः चिनगारियाँ जमा कर ले या कम।

(मुस्लिम)

माँगने की इजाजत कब है

हजरत समुरः (र0) बिन जुन्दुब से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, सवाल आदमी के चेहरे को छील देता है। मगर यह कि आदमी मुसलमान हाकिम से माँगे और जरूरत पर माँगे।

(तिर्मिज़ी)

अल्लाह के सामने अपनी जरूरियात पेश करना

हजरत इब्नि मस्ऊद (र0) से रिवायत है कि रसुलूल्लाह (स0) ने फरमाया, किसी शख्स को कोई फाका पेश आये, अगर वह उस फाके को लोगों के सामने पेश करे तो उसका फाका जाइल न होगा और अगर अल्लाह के सामने पेश करेगा तो उसको जल्द या बदेर रिज्क़ अता होगा।

(अबू दावूद–तिर्मिज़ी)

सवाल न करने पर जन्नत की जिम्मेदारी

हजरत सौबान (र0) से रिवायत है कि रसुलूल्लाह (स0) ने फरमाया, जो इस बात का अहद कर ले कि मैं लोगों से किसी किस्म क़ा सवाल न करूँगा तो मैं उसके लिए जन्नत का जिम्मेदार हूँ। मैंने कहा, मैं (ऐसा करूँगा) फिर मैंने किसी से कुछ नहीं माँगा।

(अबू दावूद)

सवाल किसके लिए जाइज है

हजरत कुबैसः (र0) से रिवायत है कि मैंने कुछ माल की जिम्मेदारी अपने सर ली थी। मैं रसूलुल्लाह (स0) की खिदमत में हाजिर हुआ और आपसे इस बारे में सवाल किया। आपने फरमाया, इतना ठहरो कि सदका का माल आ जाये, तो मैं तुमको दूँगा। फिर फरमाया, ऐ कुबैसः (र0) सवाल तीन आदमियों के अलावः किसी को जाइज नहीं। (1) ऐसा आदमी जो किसी बात का जिम्मेदार हो तो उसको मांगना जाइज़ है मगर इतना जो उसकी जरूरत को काफी हो। (2) ऐसा शख्स जिसको कोई सख्त हादिसा या माली नुकसान पहुँचा हो तो उसको इस कदर माँगना जाइज है जिसमें गुजर–बसर कर सके, या यह फरमाया कि जिन्दगी बसर करने का सामान उसको मिल जाये। (3) ऐसा आदमी कि जिसको सख्त जरूरत पेश आये और उसकी कौम के तीन मुअ़तबर आदमी कहें कि यह सख्त हाजतमन्द है, तो उसको माँगना जाइज है। इसके सिवा हर एक पर सवाल हराम है। जो माँगकर खाये वह हराम खा रहा है।

मिस्कीन व गरीब कौन है

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, वह मिस्कीन नहीं है जो लोगों के पास एक लुकमः या दो लुकमः, एक खजूर या दो खजूरों के लिए आये जाये। मिस्कीन वह है जिसके पास इतना न हो जो उसके लिए काफी हो और लोगों को उसके हाल की खबर भी न हो कि उसको सदका दे। और वह मजमे में खड़ा होकर शर्म व ग़ैरत की वजह से सवाल भी न कर सके।

(बुखारी–मुस्लिम)

बे–माँगे मिले तो लेना जाइज है

हजरत सालिम अपने वालिद अब्दुल्लाह बिन उमर (र0) से रिवायत करते है कि रसूलुल्लाह (स0) मुझे कुछ देते तो मैं अर्ज करता कि मुझसे जियादः जो मूहताज हो उसको दीजिए। आप फरमाते, इसको ले लो; जब तुम्हारे पास ऐसा माल आये जिसमें तुम्हारा दिल नहीं लगा था और न तुमने माँगा था तो उसको ले लिया करो और बढ़ाओ। अपने इस्तेमाल में लाओ चाहे सदका करो, और जो ऐसा न हो तो उस के पीछे अपना दिल न लगाओ। हजरत सालिम कहते हैं कि हजरत अब्दुल्लाह किसी से कुछ नहीं मागते थे मगर जो देता था उस को वापस भी नहीं करते थे।

(बुखारी व मुस्लिम)

❑❑

अनुरोध

लेखकों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर लिखें, स्पष्ट तथा सरल लिखें तारीखी वाकिआ़त के हवाले जरूर लिखें।

(सम्पादक)

मुस्लिम तू कहां है?

मस्जिद हो या मन्दिर हो
हैं बम के धमाके
बाज़ार और होटल भी
छूटे नहीं भागे
और ज़िन्दगी इन्सान की
मच्छर की तरह है
शैतान भी हैरान है
इस ज़ुल्म के आगे
उठ हक़ की हिमायत को
मुस्लिम तू कहाँ है
सुन ले तेरी ग़फ़लत से
बिगड़ा ये जहां है
मुनकर न हो आ़लम में
ये फ़र्ज़ था तेरा
मअ़रूफ़ यां बर्पा हो
ये फर्ज़ था तेरा
फिर ज़ुल्म इस आ़लम में
क्यों फैल गया है
होगा सुवाल तुझ से
क्या फ़र्ज़ था तेरा
उठ हक़ की हिमायत को
मुस्लिम तू कहां है
सुन ले तेरी ग़फ़लत से
बिगड़ा ये जहां है।

❑❑

किस्त : दस

कारवाने ज़िन्दगी

आप बीती

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी

निराशाजनक बचपन

यहाँ पर बिला तकल्लुफ इस सच्चाई का इज्हार करना भी जरूरी है कि मेरा बचपन बड़ा धुमिल बल्कि मायूसकुन और हिन्दी मुहाविरा "होनहार बिरवा के चिकने चिकने पात" के बिल्कुल उल्टा था। मेरी उम्र के और खानदान के बच्चों में भी आमतौर से जितना शऊर और सलीका पाया जाता था वह भी मुझ में नज़र नहीं आता था। कुदरती तौर पर माँ को इस का दुख था, और खानदान की अज़ीज औरतों और बाज बुजुर्ग भी इस एहसास को अपने रिमार्कस से ताजा और जिन्दा करते रहते थे। इस का एक बड़ा फ़ायदा यह हुआ कि उन्हों ने दिल खोल कर मेरी इस्लाह व तरबियत (शिक्षा–दीक्षा) ज्ञान प्राप्ति और कुबूलियत व कामयाबी के लिये दुआयें मांगने को अपना वज़ीफा बना लिया। फिर अल्लाह ने उन की जबान से नज्म व नस्र (गद्य) में जो कुछ निकलवाया उस की मिसाल इस दौर में मुशकिल से मिलेगी। मेरी वालिदा फ़रमाती थीं किसी ऐसी परेशानी के जमाने में मियाँ (मेरे नाना साहब) को मैं ने ख्वाब में देखा कि वह उस पुराने ख्वाब को याद दिला रहे हैं जिस में उन्हों ने "सो किसी जी को मालूम नहीं जो छुपी धरी है उनके वास्ते आँखों की ठंडक" (32–17) की बशरत सुनी थी, और फरमा रहे हैं कि तुम इस कदर क्यों परेशान हो? मैं समझता हूँ कि मुझे दो हर्फ़ (अक्षर) आये और खुदा के नेक और मकबूल बन्दों से जो नजदीकी की दौलत और उन की शफ़कत और दुआओं की नेमत हासिल हुई वह उन्हीं तड़पा देने वाली दुआओं की बरकत है।

उस ज़माने में जब मैं कुछ लिखने के क़ाबिल हुआ तो वालिदा साहिबा मुझे ताकीद करतीं थीं कि मैं जब कुछ लिखूँ तो बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के साथ तर्जमः "ऐ अल्लाह मुझे अपने फ़ज्ल से वह अफजल से अफ़ज़ल चीज़ अता फरमा जो तू अपने नेक बन्दों को अता फरमाया करता है" भी लिखूँ। इस की आदत मुझे अर्से तक रही और अब भी दुआ करते वक्त अक्सर यह दुआ याद आ जाती है।

एक क़ाबिले ज़िक्र वाक़या

खानदान के छोटे से दायरा और माहौल का एक क़ाबिले ज़िक्र वाक्या 1925 ईस्वी में मेरे हक़ीकी मामूजाद भाई सैयद सिराजुन्नबी हसनी के अमेरीका से वापसी का है। उन की आमद पर उन के चचा जाद और हमारे मामूजाद भाईयों और अज़ीज़ नवजवानों ने स्वागत की सुव्यवस्था की थी। कई रोज से झाडियाँ बन रही थी और फाटक तैयार हो रहे थे। खानदान के बुजुर्ग और जो बच्चे आ जा सकते थे, वह स्टेशन लेने गये। बारिश की वजह से दरिया बढ़ा हुआ था, और आम रास्ते पर पानी आ गया था, इस लिये उन को बाहर बाहर से लाना पड़ा। यह हमारे छोटे से खानदान में एक तारीखी दिन था। और हम सब नवजवान लड़के बहुत खुश थे। यह शुक्र की बात है कि हमारे यह दोनों भाई (सैयद मुहम्मद अहमद साहब बैरिस्टर और सैयद सिराजुन्नबी हसनी) इंग्लैड और अमेरीका से अपने अकायद को महफूज , और अपने दीन को सही सलामत लेकर वापस आये थे। नमाज और तिलावते कुरआन के पाबन्द, बुजुर्गों का अदब और दीन का आदर करने वाले थे। मालूम हुआ कि यह दोनों (मौलाना अब्दुल माजिद साहब दरियाबादी की जबान में) "याजूजी" मुल्कों और शहरों में भी नमाज व रोजे के पाबन्द रहे, और अपने अकीदे पर मजबूती से कायम। भाई जान सिराज की आमद पर उन के नवजवान भाइयों ने खेल आदि के प्रोग्राम रखे थे। कई दिन इस छोटी सी बस्ती में बड़ी चहल पहल रही।

लखनऊ में नवाब नूरूल हसन खाँ मरहूम की कोठी पर क़ियाम

भाई साहब मरहूम को जब लखनऊ के क़याम में इतमीनान हासिल हुआ तो उन्हों ने जल्द मुझे अपने पास बुला लिया। बोस्ताँ पढ़ने का सिलसिला अब यहाँ अपने चचा सैयद अब्दर्रहमान साहब से जारी हो गया, जिन की उसी अहाता में कोठी थी। सैयद ज़हूरूल हसन साहब और सैयद नजमुल हसन साहब के लड़के सैयद हबीबुल हसन मरहूम, सैयद अनवारूल हसन और सैयद कमरूल हसन मेरे लगभग हमउम्र थे। किसी से एक दो साल की बड़ाई छोटाई थी। साथ खेलते, साथ खाते और कभी कभी कुश्ती भी लड़ते। उन की दादी साहिबा जिन को हम सब लोग बेगम साहिबा कहने के आदी थे और बावजूद उन के समझाने के फूफी अम्माँ या कुछ और कहने की आदत न पड़ी। हम सब को एक नजर से देखतीं, बल्कि अर्से तक उन्होंने मुझे और हबीब भाई को जो बिल्कुल ही हम उम्र थे, गर्मियों में चमन में हौज के पास जहाँ आराम करती थीं, करीब ही लिटाया। मुझे याद है कि हम और यह सब भाई एक दिन नाश्ता कर रहे थे, वह तशरीफ लाईं और मुझे मुखातिब करके कहने लगीं कि अली! जब हम तुम्हारे घर आते थे तो हम ने बारहा तुम को अपनी वालिदा से कहते सुना कि बीबी (मैं वालिदा को इसी तरह याद करता था) फुलाँ चीज बिकने आई है, पैसा दे दीजिये। अब तुम मुझ से फरमाइश क्यों नहीं करते ? मैं चुप हो गया। यह कहकर उन्होंने बटुवा खोला और पाँच रूपये का नोट निकाल कर दिया (जो इस जमाने में पचास रूपये के बराबर है) और फरमाया कि जो तुम्हारा जी चाहे खरीदो और खाओ। इसी तरह एक मर्तबा तशरीफ लाईं और हँसी में कहा कि अली! तुम अब बड़े हो गये हो, अब तुम से पर्दा करना चाहिये। मैं इसको हकीक़त समझा, और कुछ खफीफ सा हुआ। फरमाने लगीं, बेवकूफ हो, अपने पोतों का नाम लिया, फरमाया क्या मैं हबीब से पर्दा करूँगी, अनवार से पर्दा करूँगी? यह मातृत्व (मादराना शफकत) उन का हम भाई बहनों के साथ अखीर दम तक रहा।

इस कोठी में रहने का एक फायदा यह हुआ कि आँखों के ज़ंगार फट गये और दौलत से कभी आँखें खीरः नहीं हुई, क्यों कि इस का आला से आला और ऊँचे से ऊँचा रूप इस कोठी में देख लिया मेरे सामने ही एक मर्तबः बैगम साहिबा भोपाल नवाब सुल्तान जहाँ यहाँ आई और हम बच्चों के सर पर हाथ रखा। नान पारा की रानी कमर जमानी बेगम और दूसरे रईस घरानों की बीबियाँ और रऊसा आते और मेहमान होते। सैयद जहूरूल हसन साहब का हलक–ए–अहबाब बड़ा था। वह टेनिस के मुमताज प्लेयर थे, और अस रिश्तो से मुस्लिम और गैर मुस्लिम, लखनऊ यूनीवर्सिटी के बाज प्रोफेसर साहिबान वकला और शहर के रऊसा आते। कोठी के आँगन ही में टेनिस कोर्ट था, और कोठी के एक हिस्से में बिलियर्ड रूम, इस लिये नये तालीम याफ्ता और खुशहाल तबकः के लोगों को भी खूब देखा, अवध की तहजीब, लखनऊ के आदाब, रियासत को अमारत व शौकत, और नवाबों के ठाढ सब सामने आये, और कोई चीज अजनबी नहीं रही।

इस माहोल में भाई साहब दो बातों का खास एहतमाम रखते थे, यह कि नमाज जमाअत के साथ पाबन्दी से पढ़ता हूँ। कभी ऐसा हुआ कि वह मेडिकल कालेज से वापस आये जो आमतौर से मगरिब बाद होती थी, और पूछा जुह्र अस्र और मग़रिब की नमाजें पढ़ी थीं मैने कहा "हाँ"। उन को कुछ शुबह हुआ तो तीनों नमाजें दोबारा पढ़वाईं। दूसरे यह कि मैं कोठी के मुलाज़िमों के पास (जिन की बड़ी तादाद थी) ज्यादा न बैठू। और बे तकल्लुफ न हूँ। और यह कि कोई नाविल आदि किसी से लेकर न पढूँ। वह हमारे जाती कुतुबखाने में से खुद किताबें छाँट कर देते, और अध्ययन करवाते। इन किताबों में से सबसे पहली किताब जो जढ़ने को दी वह "सीरते खैरूलबशर" थी, इस के बाद "रहमतुल लिलआलमीन" अध्ययन में आई।

हमारी पारिवारिक परम्पराओं का तकाजा था कि मैं फारसी की शिक्षा पूरी करूँ और उस के साहित्य व शायरी की आखिरी किताबें "यूसुफ जुलेखा" "रूकआते अबुल फजल" "सिकन्दर नामा" "नसरे जहूरी" आदि कम से कम जरूर पढूँ। फारसी में रूकआ लिखने का भी अभ्यास करूँ कि इसका सिलसिला मेरे भाई तक

जारी रहा था और वालिद साहब अर्से तक भाई साहब को फारसी ही में खुतूत लिखते थे। मैंने अपनी तालीम की तकमील के बाद भी उन को काबुल के मशहूर शायर मुहम्मद सरवर खाँ 'गोया' से बड़े प्रवाह के साथ फारसरी में बात चीत करते हुए सुना है। लेकिन भाई साहब को (जो पुरानी व नई शिक्षा के संगम और जमाने पर विशाल दृष्टि रखते थे) मालूम था कि अब हिन्दुस्तान में फारसी का वरक (पन्ना) उलट रहा है, और अरबी जबान का दौर जल्द आने वाला है। उन्हों ने मेरी फारसी तालीम यहीं पर खत्म करा दी। मैं उन की फारसी की पसन्दीदः किताब "उसूले फारसी" लेखक मौलाना मुहम्मद फारूक चिड़िया कोटी पढ़ चुका था। और मुझे फारसी में इतनी शुद बुद हो गयी थी कि उस की मदद से बाद में तसव्वुफ और तजकिरे की किताबें "मकतूबात इमाम रब्बानी" और "एजालतुलखिफा" आदि का अध्ययन आसानी से कर सकूँ। उन्हों न एक तरफ अंग्रजी की एक रीडर शुरू कराई, दूसरी तरफ अरबी के लिये अपने दोस्त और अरबी जबान के बेमिसाल उस्ताद शैख खलील इब्नि मुहम्मद इब्नि हुसैन यमनी भोपाली के सुपुर्द किया। यह खानदान दो पुश्तों से हमारे खानदान का उस्ताद चला आ रहा था। मेरे वालिद साहब उन के दादा अल्लामा हुसैन इब्नि मुहसिन अंसारी के हदीस में और उन के वालिद शैख मुहम्मद के साहित्य में शागिर्द थे। (जारी)

❑❑

पूंजीवादी व साम्यवादी व्यवस्था से महान एवं उच्च है इस्लामी व्यवस्था

(विद्या प्रकाश)

इस्लाम धर्म में दान और दयाकी सुदृढ़ परम्परा अल्लाह तआला का नाम ही स्वयं में मेहरबानी और दयालुता का प्रतीक है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फ़रमाया है, "ऐ लोगो ! मैं रहमत और दया बनाकर भेजा गया हूं।" आपने फ़रमाया, "दया यह नहीं कि तुममें से कोई अपने साथी के साथ करे, परन्तु दया यह है कि साधारण जनता के साथ करो।" यानी दया सब लोगों के साथ होनी चाहिए, जिसको आप जानते हो या न जानते हो। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने इसी सिलसिले में यह भी कहा कि दया करने वालों पर अल्लाह तआला दया करता है। धरती पर बसने वालों के ऊपर दया करो आकाश वाला तुम पर दया करेगा।

यदि हम नबी (सल्ल0) के इस फ़रमान पर गंभीरतापूर्वक विचार करें तो हमें इस्लाम धर्म की महानता और व्यापकता का स्वतः आभास होने लगता है तथा हमें यह भलीभांति ज्ञान होता है कि इस्लाम धर्म सम्पूर्ण मानवजाति के लिए अल्लाह की रहमत है।

इस्लाम में बच्चों और महिलाओं के प्रति दया का विशेष महत्व दरसाया गया है। नबी (सल्ल0) ने एक जंग में एक औरत को मरा पाया तो तुरंत बच्चों और औरतों को क़त्ल करने से मना कर दिया।

इस्लाम में दान की बड़ी समृद्ध परम्परा दिखती है। इस्लाम में ज़कात, ख़ैरात और फ़ितरा के प्रावधान हैं, जिनके लिए लोगों को उभारा गया है। ज़कात एक क़िस्म का धार्मिक कर है, जो हर सामर्थ्यवान मुसलमान को प्रत्येक वर्ष देना है। अपनी साल भर की बचत चाहे वह नक़द, ज़ेवर, ग़ल्ले आदि की शक्ल में हो उसका देना होता है। यह रक़म निर्धन, मोहताज एवं ज़रूरतमंद लोगों में बांटी जाती है। इसके ज़रिये धनवान लोग अपने धन को शुद्ध करते हैं। जबकि ख़ैरात में ज़रूरतमंद लाचार ग़रीब को आप जितना चाहे दे सकते हैं। फ़ितरा में ईद की नमाज़ अदायगी से पूर्व अपने किसी ग़रीब रिश्तेदार या पड़ोसी को अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य को लगभग तीन किलो गेहूं या उसके बराबर रक़म देनी होती है यानी यदि आपके परिवार में दस सदस्य हैं और आप सामर्थ्यवान हैं तो आप पर वाजिब है कि फ़ितरे की अदायगी सभी की ओर से हो।

इस तरह उनके अन्दर ग़रीबों के प्रति सहानुभूति पैदा होती है। इस प्रकार न धनवान निर्धनों से घृणा करते हैं और न निर्धन धनवानों से ईर्ष्या। इस दृष्टि से इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था पूंजीवादी तथा साम्यवादी व्यवस्था पूंजीवादी और साम्यवादी सामाजिक व्यवस्था की बुनियाद व्यक्ति के शोषण तथा घृणा की भाव भूमि पर आधारित है, जबकि इस्लामी व्यवस्था स्वैच्छिक दान और दया पर आधारित है। पूंजीवाद दूसरे का धन जबरन छीनने-लूटने का हिमायती है, जबकि इस्लाम दान और दया का समर्थक है।

❑❑

सफाई सुथराई और उसके आदाब

– अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी
अनुवाद नजमुस्साकिब अब्बासी

इस्लाम ने सफाई सुथराई की शिक्षा में सादगी व निःसंकोच को विस्तार दिया है और ऐसी शिक्षा नहीं दी है जो हिंसा, अतिक्रम और अन्धविश्वास की सीमा तक पहुँच जाए। इसी बुनियाद पर इस्लाम ने कतिपय उन कठिनाईयों को दूर किया जो इस सम्बन्ध में दूसरे धर्मों में पाई जाती थी, जैसे यहूदियों के धार्मिक विधि के अनुसार अपवित्र के पवित्रता के लिये अनिवार्य था कि नहाने के बाद उस दिन का सूरज डूब जाए तब नहाने वाला पवित्र हो। मगर इसलामी शिक्षा के अनुसार आदमी को इस सम्बन्ध में केवल इस प्रकार सतर्क रहना चाहिये कि पेशाब की छीटें शरीर या कपड़े पर न पड़ने पाए। उससे अधिक एहतियात हिंसा, अतिक्रम की सीमा तक पहुँच जाती है। अतः हज़रत अबू मूसा अशअरी रजि0 अत्याधिक एहतियात बरतते हुये शीशी में पेशाब किया करते थे और कहते थे कि बनी इस्राईल के शरीर पर जब पेशाब लग जाता था तो उसको कैंची से काट डालते थे। लेकिन हज़रत हुजैफह रजि0 ने इस अत्याधिक इहातियात को नापसन्द फरमाया और कहा कि काश! वह इस तरह सख्ती न करते क्योंकि मैने हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) को मामूली तौर पर इस्तिन्जा करते हुये देखा है (मुस्लिम)

यहूदियों के यहाँ ये भी परम्परा थी कि जब कोई औरत मासिक धर्म से गुजर रही होती तो उसके साथ खाना–पीना छोड़ देते थे और उसको घर से बिल्कुल अलग कर देते थे। सहाबा रजि0 ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) से इस सम्बन्ध में पूछा तो ये आयत उतरीः अनुवादः(और ऐ पैगम्बर!) लोग तुमसे हैज़ (मासिक धर्म) के बारे में प्रश्न करते हैं तो (उनको) समझा दो कि वह गन्दगी है तो मासिक धर्म (हैज़) के दिनों में औरतों से अलग रहो और जब तक पवित्र न हो जाएं उनसे सम्भोग न करो और जब वह पवित्र (पाक) हो जाएं तो उनके पास आओ (सुरह बकरहः)

उसके अनुसार आपने आदेश दिया कि सहवास के अलावा उनसे सब काम ले सकते हो और स्वंय की कार्य प्रणाली से उसकी मिसालें कायम कर दीं। अतः हज़रत आइशा रजि0 फरमाती हैं कि मै उस हालत में आप (सल्ल0) के बालों में कंघी करती थी और आप (सल्ल0) के सर को धोती थी। एक बार आप (सल्ल0) ने मुझ से कोई चीज उठाकर माँगी, मैने असमर्थता जताई तो फरमाया ये नापाकी तुम्हारे हाथ में नहीं है (मुस्लिम)

नापाकी की हालत में पवित्र स्थानों जैसे मस्जिद में नहीं जा सकते, कुरआन मजीद को नहीं छू सकते। इसी सिद्धांत के आधार पर कुछ सहाबा रजि0 ने हालते जनाबत (अपवित्रता) में रसूलुल्लाह (सल्ल0) से हाथ मिलाने और उनके साथ उठने–बैठने से स्वंय को रोके रखा लेकिन हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया कि "मुसलमान नापाक नहीं होता" (अबूदाऊद) अर्थात मुसलमान सम्भोग के बाद की स्थिति में और स्वप्नदोष के बाद ऐसा नापाक नहीं हो जाता कि उसके छूने से कोई दूसरा आदमी या चीज नापाक हो जाए।

एक औरत ने हज़रत उम्मे सलमा रजि0 से पूछा कि मैं औरत हूँ मेरे दामन लम्बे होते हैं और मैं गन्दी जगहों पर चलती हूँ अर्थात जमीन में घिसटने के कारण सम्भव है कि दामन में गन्दगी लग जाती हो, बोली कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया कि उसके बाद की जमीन उसको पवित्र कर देती है (अबूदाऊद) यानि उसके बाद जो सूखी और पवित्र जमीन आती है वह उस गन्दगी को समाप्त कर देती है। एक औरत ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) से पूछा कि मस्जिद की और हमारा जो रास्ता जाता है बदबूदार है। जब वर्षा हो तो हम क्या करे ? फरमाया कि उसके बाद उससे अच्छा रास्ता नहीं ? बोली हाँ है। फरमाया तो वह उसकी पूर्ति कर देता है। इस्लाम का सिद्धांत है कि खुश्क जमीन पवित्र है। इसलिए आप (सल्ल0) ने फरमाया कि जमीन मेरे लिये पवित्र कर दी गई है और इसी लिऐ वह हालते तयम्मुम में पानी के स्थानापन्न

(कायममुकाम) है। जूता जमीन पर रगड़ने से पाक हो जाता है।

इस्लाम ने इस सम्बन्ध में सबसे अधिक जो आसानी पैदा की वह ये थी कि तयम्मुम को गुस्ल (स्नान) और वुजू का स्थानापन्न करार दिया और उसको समस्त सहाबा ने एक बरकत समझा

नहाने का तरीका ये सिखाया गया है कि पहले दोनो हाथ धो लिये जाए फिर कमर से धोकर गन्दगी दूर कर ली जाए फिर सारे बदन पर पानी बहाया जाए हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) जरूरत से स्नान इस प्रकार करते थे, पहले दोनो हाथ धोते, फिर दाहिने हाथ से पानी बहाकर बाएं हाथ से कमर के नीचे दोनों ओर धोते, फिर वुजू करते लेकिन पैर नहीं धोते, फिर सर पर तीन बार पानी बहाकर बाल की जड़ों को मलते, फिर सारे बदन पर पानी बहाते और अंत में पैर धोते। (मुस्लिम)

इस्लाम में प्रतिदिन नहाने का कोई आदेश नहीं है और न अरब जैसे देश मे ये हो सकता था। लेकिन अगर कोई ऐसे देश में जहाँ पानी की अधिकता हो और वहा सफाई के लिये प्रतिदिन नहाले तो वैध है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) पाँचों समय की नमाज़ की मिसाल देते हैं कि अगर किसी के दरवाजे पर नहर बहती हो और वह उसमें प्रतिदनि पाँच बार नहाया करे तो क्या उसके शरीर पर मैल रह सकता है? (बुखारी)

पाकी से सम्बन्धित हदीसें

हज़रत अबु मालिक अशअरी रजि0 बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया "पाकी आधा इमान है" (मुस्लिम)

हज़रत अबूहुरैरह रजि0 कहते हैं कि मैने रसुलुल्लाह (सल्ल0) से सुना है, आप (सल्ल0) फरमाते थे कि मेरी उम्मत वुजू की चमक के निशान से पहचान कर बुलाई जाएगी तो जिसको अपनी चमक बढ़ाना स्वीकार हो वह वुजू करके बढ़ाए। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अबूहुरैरह रजि. बयान करते है कि मैने अपने प्रिय हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) से सुना है, फरमाते थे "मोमिन का गहना (स्वर्ग में) उस जगह तक पहुँच जाएगा जहाँ तक वुजू का पानी पहुँचा होगा। (मुस्लिम)

हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रजि0 कहते है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया जिसने वुजू किया और अच्छी तरह से किया तो उसके शरीर से समस्त दोष निकल जाएंगे यहाँ तक कि नाखुन के नीचे से भी। (मुस्लिम)

हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रजि0 बयान करते हैं कि मैने हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) को इसी प्रकार वुजू करते देखा जिस प्रकार मैं कर रहा हुँ। और आप (सल्ल0) ने फरमाया "जिसने इस प्रकार वुजू किया तो उसके अगले पिछले सब गुनाह (सगीरह) माफ हो जाएंगे और उसका मस्जिद में जाने और नमाज़ पढ़ने का पुण्य अलग है। (मुस्लिम)

हज़रत अबुहुरैरह रजि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया "जब मोमिन वुजू करते समय अपना चेहरा धोता है तो उसकी आखों की सभी गलतियाँ जिनसे उसने देखा है पानी के साथ, या ये फरमाया कि पानी की अन्तिम बूँद के साथ निकल जाती है। फिर जब वह हाथ धोता है तो उसके हाथों की सभी गलतियाँ जो उसके हाथों से हो चुकी है पानी के साथ या पानी की अन्तिम बूँद के साथ निकल जाती हैं। फिर वह पैर धोता है तो पैरों की सभी खताऐं जो उसने चलकर की थीं पानी के साथ या फरमाया कि पानी की अन्तिम बूँद के साथ निकल जाती है यहाँ तक वह (सगीरह) गुनाहों से पूरी तरह पाक हो जाता है (मुस्लिम)

हज़रत अबूहुरैरह रजि0 बयान करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने फरमाया "क्या मैं तुमको ऐसी बात न बताऊँ जिसके कारण अल्लाह तआला खताओं को मिटाएगा और मान बढ़ाएगा, सहाबा रजि0 ने अर्ज कि जरूर बताइये या रसूलल्लाह! फरमाया पूरा वुजू करना और मस्जिद की ओर कदमों की ज्यादती (अधिकता से जाना) और नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ की प्रतिक्षा, ये रिबात है, (1) ये रिबात है। (मुस्लिम)

माखूज़ : ज़ादे सफर

अज़ :अमतुल्ला तस्नीम रह0

(1) रबात दीन की सीमा पर दीन के शत्रुओं के मुकाबले के लिये बैठे रहना ताकि वह आगे न आ पाए। उसका बड़ा पुण्य है तो नमाज़ के लिये बैठे रहना शैतान से मुकाबला है उसको भारी न पड़ने देना है।

❑❑

हम कैसे पढ़ायें?

क़िस्त ग्यारह

— डॉ. सलामत उल्लाह

दीनियात और अखलाक़ (आचरण) की तालीम हमने जान बूझ कर इस विषय को आखिर के लिये छोड़ दिया था क्यों कि इस विषय पर रायज़नी करना खतरे से खाली नहीं है। हिन्दुस्तानी जजबाती तौर पर मजहबी वाके हुए हैं। मजहब के बारे में उन की जोभी परिकल्पनायें है। चाहे वह न्यायसंगत हों या न हों वह इस में किसी प्रकार का संशोधन नहीं करना चाहते । लेकिन यह बात कुछ ठीक नहीं मालूम होती कि इस वस्तुस्थिति से डर कर हम शिक्षक की हैसियत से अपनी राय इस बारे में साफ और स्पष्ट शब्दों में जाहिर न करें। हमें इस की चिन्ता नहीं करनी चाहिये कि लोग हमारी राय का समर्थन करेंगे या विरोध। हमें पाठयक्रम के मामले में इस बात को अन्य बातों पर प्राथमिकता देना चाहिये कि बात की मानसिक तरक्की व विकास की किसी खास मंजिल पर कोई चीज़ उस के स्वभाव व प्रवृति के अनुकूल हैं या नहीं। अन्यथा इस का नतीजा वही होगा जो लकड़ी के रगो रेशा के खिलाफ रन्दा करने का होता है। इसी लेहाज से हमें मजहबी तालीम के मसअले पर भी गौर करना चाहिये। मजहबी तालीम के लिये जो पाठ्यक्रम और प्रणाली प्रयोग किये गये हैं हमें न केवल उन के ठीक होने में शंका है बल्कि उन का उद्देश्य भी उचित नहीं प्रतीत होता। हमारी मज़हबी तालीम अधिकाँश मातृभाषा में नहीं होती या अगर कुछ बातें मातृभाषा में बताई भी जाती हैं तो वह इतनी अछूती या दार्शनिक किस्म की होती हैं जो बच्चों की समझ में नहीं आतीं। नतीजा यह होता है कि बच्चों को मजहबी तालीम से नफरत सी हो जाती है। यह दूसरी बात है कि उन्हें इस बात के खुल्लम खुल्ला जाहिर करने की हिम्मत न हो। लेकिन उन में मजहब से एक खामोश बगावत की भावना पैदा हो जाना ज़रूरी है।

मजहबी तालीम दरअसल यह नहीं है कि बच्चे को चन्द चीजें जो उस के लिये बेमानी हैं रटा दी जाये बल्कि इस का मकसद यह होना चाहिये कि बच्चे में दुनिया और इन्सान की ज़िन्दगी को देखने के लिये विशाल दृष्टि पैदा हो जाये। इस उद्देश्य को पूर्ति के लिये मजहबी किस्से कहानियाँ हमारी बड़ी हद तक मदद कर सकती हैं। इतिहास, साहित्य और सामाजिक ज्ञान में इस के लिये बहुत अवसर मिलेंगे। न सिर्फ़ इन विषयों की नज़री तालीम में बल्कि स्कूल की कुल अमली ज़िन्दगी में इन खूबियों को पैदा करने की कोशिश करनी चाहिये। जो मज़हबी तालीम का हक़ीक़ी मंशा है।

जहाँ तक अखलाक़ी तालीम (नैतिक शिक्षा) का सम्बन्ध है, यह कोई अलाहदा चीज नहीं है। इस के लिये अलग से कोई बाज़ाब्तः पाठ्यक्रम नहीं होना चाहिये। वरना असल मकसद फौत हो जाने का भय है। नैतिक शिक्षा के लिये हर विषय की शिक्षा के दौरान अवसर निकलें गे, हर सूरत में आचरण के व्यवहारिक पक्ष पर अधिक बल देने की ज़रूरत है, क्योंकि मात्र नेकी का ज्ञान होने से कोई लाभ नहीं है जब तक दैनिकजीवन में इस का इस्तेमाल न हो।

व्यवहारिक निर्देश "यहाँ एक और बात जाहिर कर देनी ज़रूरी है। यद्वपि राज्य को हक है कि वह अपने स्कूलों में एक विशाल और सामान्य प्रकार का पाठ्यक्रम रायज करे। लेकिन इस आम स्कीम के विवरण को निर्धारित करना टीचर के ज़िम्मे होना चाहिये। जब राज्य एक ही प्रकार के पाठ्यक्रम के शिकंजे में तमाम स्कूलों को जकड़ देता है तो इस से टीचर के जायज़ हक़ मारे जाते हैं और इसका नतीजा वह होता है कि शिक्षण एक सजीव इन्सानी अमल और सर्जनात्मक व्यस्तता के बजाय एक शुष्क और

बेजान मेकानकी चीज बन जाती है। जाहिर है कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था किस प्रकार के इन्सान पैदा करेगी। ऐसी शिक्षा व्यवस्था में बताई हुई डगर पर चलने वाले आदमी तो पैदा हो सकते है। लेकिन सोच समझ कर स्वंय अपनी राह निकालने वाले इन्सान मुशकिल ही से पैदा होंगे। इस से कुल मिला कर राष्ट्र का विकास रूक जाने की आशंका है।"

सुझाव

1. "बुनियादी कौमी तालीम का निसाब" और मदरसा इब्तेदायी जामे मिल्लिया, का निसाब प्रकाशक मकतबा जामिया देहली का अध्ययन करें। रेमान्ट की पुस्तक "शिक्षा के सिद्धान्त" का अध्याय सात और लेखिका एडम्स की किताब "आधुनिक शिक्षण" का अध्याय दो लाभदायक सिद्ध होगा। (यह दोनों किताबें उस्मानिया ट्रेनिंग कालेज हैदराबाद दकन ने प्रकाशित की है।)

2. मातृभाषा के महत्व पर चर्चा कीजिये।

3. विदेशी भाषाओं की शिक्षा की प्राथमिक स्कूल में क्या गुँजाइश है ? हमारे मुल्क में हिन्दुस्तानी की शिक्षा को क्यों महत्व दिया जाता है ? "हिन्दुस्तानी क्या है ?" लेखकः डा0 ज़ाकिर हुसैन का अध्ययन कीजिये।

प्रस्तुति : एम0 हसन अंसारी

(जारी)

दीनी तालीम के सिल्सिले में लेखक अपना मौक़िफ वाजेह न कर सके अगले अंक में इस पर बात होगी इनशाअल्लाह (सम्पादक)

वर्चस्व का स्तर

"मिल्लत अगर अपनी पस्ती को वर्चस्व से, पतन को उत्थान से, अपमान को मान–मर्यादा से, बदलना चाहे तो उसे प्रत्येक स्तर पर और जीवन के हर संकाय में नेतृत्व के चयन के सिलसिले में खुदा और रसूल के मेआर (स्तर) को सामने रखना होगा। खुदा ने वर्चस्व के लिये शर्त रखी है, "इन कुन्तुम मोमिनीन" की, हर मुसलमान यह जानता है कि एक मोमिन पर खुदा की वहदानियत और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की रिसालत पर ईमान के बाद चन्द फ़रायज़ भी आयद होते हैं, इस में एक फर्ज़ के बारे में इरशाद है कि "नमाज़ दीन का स्तम्भ है जिस ने इसे क़ायम किया उसने दीन को क़ायम किया और जिसने इसे ढाया गोया उसने दीन को ढा दिया।"

(इस्हाक़ जलीस नदवी रह0)

प्रस्तुतिः एम0 हसन अंसारी

एअ़लान

एजेंसी वाले हजरात नोट कर लें मार्च 2009 से 'सच्चा राही' के एक पर्चे की कीमत 12 रु0 होगी और इस का वार्षिक चन्दा 120 रु0 होगा।

(सम्पादक)

अरबी मदरसों का महत्व

डा0 इक़बाल ने कहा

"जब मैं तुम्हारी तरह जवान था तो मेरे दिल का हाल भी ऐसा ही था, मैं भी वही कुछ चाहता था जो तुम चाहते हो। इन्कलाब, एक ऐसा इन्कलाब जो हिन्दुसतान के मुस्लमानों को पश्चिम के सभ्य और शिष्ट कौमों (नेशन्स) के समकक्ष खड़ा कर दे।" आगे फरमाया "इन मकतबों (मदरसों) को इसी हालत में रहने दो। गरीब मुसलमानों के बच्चों को इन्हीं मदरसों में पढ़ने दो! अगर यह मुल्ला और दरवेश न रहे तो क्या होगा ? जो कुछ होगा मैं उन्हें अपनी आँखों से देख आया हूँ। अगर हिन्दुस्तान के मुसलमान मदरसों के असर से महरूम हो गये तो बिल्कुल उसी तरह जिस तरह स्पेन में मुसलमानों की आठ सौ साल हुकूमत के बावजूद आज गरनाता और कुरतबः के खण्डहर और अल हमरा और बाबुल ख्वातीन के निशानात के सिवा इस्लाम के पैरूवों और इस्लामी तहज़ीब के आसार का कोई चिन्ह नहीं मिलता, हिन्दुस्तान में भी आगरा के ताजमहल और देहली के लाल क़िला के सिवा मुसलमानों की आठ सौ साला हुकूमत और उनकी तहज़ीब का कोई निशान नहीं मिलेगा।"

प्रस्तुति : एम0 हसन अंसारी

इक्कीसवीं सदी और आलेम इस्लाम

– समीअ़ सुल्ताननूरी

कुर्रएअर्ज को इक्कीस्वीं सदी में दाखिल हुए आठ वर्ष का अर्सा गुज़र चुका है। इस सदी में आलमे इस्लाम का क्या रोल होना चाहिये इस पर इजहारे खयाल करने से कब्ल गुजिश्ता सदी के पुरआशोब दौर पर एक तायराना नजर डाल लेना अशद जरूरी मालूम होता है । यूँ तो मुसलमानों के जवाल की इब्तिदा भाप की ताकत के साथ ही शुरू हो चुकी थी लेकिन निस्फ बींसवी सदी तक आते आते आलमे इस्लाम का जवाल नुक्तये उरूज तक पहूँच गया। यह और बात है कि मुसलमानाने आलम को जमाने के दस्त बुर्द से बचाने के लिये मुलकी गैर मुल्की सतह पर मुतअदिद तहरीकें मअ़रिज़े वजूद में आयीं जिन में सर सय्यद अहमद खाँ की अली गढ़ तहरीक खिलाफते तहरीक जमालुद्दीन अफगानी की पैन इस्लामी तहरीक वगैरह काबिले जिक्र हैं। भाप की ताकत ने इंगलैंड को तरक्की के मनाजिर पर पहुँचाने और सनअ़ती इन्कलाब लाने में अहम किरदार अदा किया जिस के नतीजे में एशियायी मुमालिक बिलखोसूस हिन्दुस्तान में दस्तकारी को जबरदस्त नुक्सान पहुँचा। अंग्रेजों ने अपने मुल्क के बने हुए सामान से एशियायी मुमालिक के बाजारों को पाट दिया जिस के नतीजे में हिन्दुस्तानी सनअ़त पर बुरा असर पड़ा और करोड़ों हुनरमन्द बेरोजगारी और फाकाकशी के शिकार हो गये। जागीरदारी की जगह सरमायादारी निजाम ने ले ली। इस सूरत हाल से जहाँएक तरफ एशियायी कौमों की मईशत तबाह हुयी वहीं अंग्रेजों की असकरी बालादस्ती और मक्र व फरेब से देशी रियासतें एक एक कर के अंग्रेजी सलतनत में शामिल कर ली गयीं। शेरदिल टीपू सुलतान की शहादत मुगलिया सलतन्त का ज़वाल उस्मानी तुर्की की पसपायी और अरबों को बेदखल कर के फलसतीन में यहूदी रियासत का कयाम सोवियत रूस के मातहत मुस्लिम इलाकों पर कबज़ा अरबों में नसली असबियत का ओरूज और इश्तराकी मुमालिक में मजहबी उमूर पर पाबन्दी वगैरह इस सदी के मख्सूस और नकाबिले फरामोश वाकेयात हैं।

बीसवीं सदी का निस्फ आखिर आलमे इस्लाम के लिये बेदारी का अहद है। इस अहद में जैसे जैसे बेदारी की लहर पैदा हूयी मुसलमानों के खिलाफ इसी रफ्तार से सारी दुनिया में जुल्म व सितम का हमला तेज तर होता गया। इराक व ईरान जंग, एबादत गाहों की बे हुरमती आलमी सतह पर मुस्लिम कुश फसादात कबायली कवानीन में मदाखलत, कोयत की हिमायत के नाम पर इराक पर अकवाम मुतहद्दा की बड़े पैमाने पर फौजी कार्यवायी। सरबिया में मुस्लिम खवातीन की इजतिमायी आबूरेजी जैसे दिल दोज वाकेयात ने सहीहुल अकीदा मुसलमानों के दिल व दिमाग को हिला कर रख दिया है।

इक्कीसवीं सदी बड़ी हद तक जहालत से नजात हासिल करने आफाकगीर ख्वान्दगी और तोसीय इल्म की सदी होगी। साइंस और टेक्नालोजी में जो कौम दीगर कौमों की तरह बहुत बेहतर और बरतर हो गयी उसी की हुक्मरानी आलेम इन्सानी पर होगी। मुसलमान जब तक इल्म व हिकमत में दूसरी कौमों से आगे रहे उन्हें बरतरी हासिल रही लेकिन जब साइंस और टेक्नालोजी में बतदरीज पिछड़ते गये। अनाने हूकुमत इन के हाथ से निकलती गयी इस लिये आलमे इस्लाम को अपने खोये हुए वकार को बहाल करने के लिये मसलकी और गिरोही असबीयत की तंगनामे से निकल कर असरी उलूम व साइंस और टेक्नालोजी को अपने एजेन्डे में सब से ऊपर रखना होगा। इसके साथ ही अपना मिल्ली तशख्खुस बरकारा रखने के लिये दीनी तालीम को भी फरोग देना होगा। तालीमयाफ्ता नवजवानों को बेरोजगारी से बचाने के लिये सनअ़ती

तालीम पर भी खातिर ख्वाह तवज्जुह देनी होगी। साथ ही फनकारों के दस्ती हुनर को चमकाने का मौका भी फराहम करना होगा। अलावह अज़ी मिल्लत इस्लामिया की अजसरे नौ शीराज़ा बन्दी करने के लिये आलमगीर मिल्ली तसौवुर को फरोग देना होगा। जो इस्लामी मुमालिक की तनजीम की राह हमवार कर सके। तारीख शाहिद है कि जब तक मुसलम्मन एक मरकज के तहत मुत्तहिद थे और खलीफा वक्त को बाला दस्ती हासिल थी। तब तक मुसलमानों की तरफ आँख उठाने की किसी में हिम्मत ही न थी यही वजह है कि मुस्लिम सय्याह और तुज्जार सर जमीने अरब से निकल कर चीन व मलाया तक बे खौफ व खतर अपना फरीजा अनजाम देते रहे। और किसी हुक्मराँ को भी उन्हें छेड़ने की जुरअत न हुयी मगर जब से मुसलमान मरकजियत को भूल कर गिरोही और मसलकी दलदल में फँस गया इस्लाम दुशमन कौमों के जब्र व इस्तिबदाद का शिकार हो गया। आलमे इस्लाम को फिर से अपना भूला हुआ सबक याद करना है और उसे इस काबिल बनाना है कि कोई भी इस की दीनी व कौमी हमीयत को चैलेन्ज न कर सके। बकौले अल्लामा इकबाल :–

एक हों मुस्लिम हरम की पासबनानी के लिये।

नील के साहिल से ले कर ता बा खाके काशगर।।

❑❑

राफेअ इब्न खुदैज (रजि0)

(जीवन परिचय)

आप का नाम राफ़ेअ और उपनाम अबू अब्दुल्ला है। आप औस क़बील के बनू हारिसा परिवार से हैं। राफेअ (रजि0) के पुरखे बनू हारिस के नेता और सरदार थे पिता और चचा के बाद परिवार की सरदारी आपको मिली। औस क़बीले के दो परिवार अब्दुल अशहल और बनूहारसिा बराबर की ताकतें थीं। अज्ञान काल में इन दोनों परिवारों में लड़ाई होती रहती थी। एक बार हारिसा वालों ने अब्दुल अशहल के सरदार सिमाक (उसैद इब्ने हुजैर के दादा) को लड़ाई में मार डाला। सिमाक के लड़के हुज़ैर ने अपने पिता के खून का बदला लिया और बनूहारिसा को हरा कर उन्हें देश–निकाल दे दिया और वे लोग खैबर चले गये फिर ये लोग एक वर्ष तक खैबर में रहे। इसके बाद स्वंय हुज़ैर को दया आई और बनूहारिसा को मदीने में रहने की आज्ञा दे दी।

मुसलमानों के मक्का छोड़ते समय हज़रत राफ़ेअ (रजि0) की आयु 12 वर्ष थी और आप ईमान ला चुके थे। बद्र की लड़ाई में आप 14 वर्ष के थे। लड़ाई में शामिल होने के विचार से हुजूर (सल्ल0) के पास आये पर हुजूर (सल्ल0) ने समझा बुझा कर वापस कर दया।

उहुद की लड़ाई में आप की आयु 15 वर्ष की हो चुकी थी, इस लिए हुजूर (सल्ल0) ने लड़ाई में शामिल होने की आज्ञा दे दी। समूरः इब्ने जन्दब भी लड़को के गिरोह में थे। जब सब लड़के हुजूर (सल्ल0) के सामने आये तो आपने समूरः (रजि0) का कद छोटा होने के कारण रोकना चाहा, उन्होंने कहा, 'आप ने राफेअ़ (रजि0) को तो आज्ञा दे दी और मुझे रोकते हैं, हालांकि मैं कुश्ती में उन्हें पछाड़ दूंगा'। हुजूर (सल्ल0) ने फरमाया, 'अगर यह बात है तो कुश्ती लड़ो'। दोनो में कुश्ती हुई तो समरः ने राफेअ़ को चित कर दिया हुजूर (सल्ल0)ने उन्हे भी मैदान में जाने की आज्ञा दे दी।

इस लड़ाई में राफेअ़ (रजि0) के सीने में एक बाण ऐसा लगा कि हड्डी को तोड़कर अन्दर घुस गया। लोगों ने बाण को खींचा तो उसकी नोक टूट कर भीतर रह गई। अल्ला के रसूल (सल्ला0) ने फरमाया मैं तुम्हारे बारे में कियामत में गवाही दूंगा।

❑❑

लेखक तारीखी वाकिओं का हवाला दिया करें
(सम्पादक)

तस्वीर का दूसरा रूख

— वहीद अशरफ मेरठ

एक ज़माना था जब फ़ख से कहा जाता था कि मेरी लड़की कुर्आन शरीफ पढ़ी हुई है। यह बड़ी बात थी, जब यह किसी घराने की बहू बनती तो सुसराल वाले भी फ़ख से कहते थे कि हमारी बहू कुर्आन शरीफ पढ़ी हुई है। ज़माने ने कुछ तरक्की की, अब उर्दू की तालीम भी होने लगी जो सिर्फ ख़त लिखने पढ़ने तक महदूद थी। फिर हालात ने करवट ली तो कुछ लड़कियां पर्दे में महल्ले के प्राइमरी स्कूल में जाने लगीं, किसी ने दो तो किसी ने तीन जमाअतें पढ़ीं और जिसने दर्जा पांच पास किया वह अपने घराने की सब से ज़ियादा तालीम याफ्ता लड़की कहलाई। यह सिल्सिला आगे बढ़ा तो मिडल तक नौबत पहुंची, फिर हाई स्कूल कर लेना बाअिसे इफ्तिखार बना। अब लड़कियों की तालीम की तरफ तवज्जुह दी जाने लगी वह भी चन्द घरानों में, किसी ने इन्टर किया तो कुछ ने बी0ए0 किया। तो कुछ ने एम0ए0 किया। यह भी जेहन में रखये कि अब तक सिर्फ आर्ट साइड के सबजेक्ट ही तालीम का जरीआ बने थे, साइन्स और कामर्स बहुत दूर थे। उस के बाद साइन्स में भी डिग्रियां लीं। अल्लाह का बड़ा इनआ़म है कि आज तालीम की हर ब्रांच में लड़कियां तालीम हासिल कर रही हैं। कामर्स जैसे खुश्क मज़ामीन से भी छेड़ छाड़ की ऐसे कोर्सेज़ भी कर रही हैं जिस में तालीम के दौरान ही कम्पनियों की तरफ से बड़ी माकूल माहाना रकम पर आफर भी दे दिया जाता है, या कोर्स खत्म करने पर लाखों का सालाना पैकेज भी दिया जाता है। मैं लड़कियों की अअ़ला तालीम का मुखालिफ नहीं, लेकिन तस्वीर के दूसरे रूख से मुतमइन नहीं हो पाता, हो सकता है मेरे सोचने का यह तरीका ग़लत हो। मेरे कहने का मतलब यह है कि तालीम में और मुलाजमत में एअतिदाल पसन्द रवय्या इख्तियार किया जाए, लड़कियों को ऐसे कोर्सेज कराए जाएं जो उन के लिये मुनासिब हो। दून्या भी बनी रहे और दीन भी हाथ से न जाए, मुलाजमत के लिये ऐसे शुअबों (विभागों) का इन्तिखाब हो जहां ना साजगार हालात से महफूज रहा जा सके। इस दौड़ में हिस्सा लेना कि फुलां की लड़की ने यह किया मैं भी अपनी लड़की को यही कराऊंगा, यह रेस अच्छी नहीं है। लड़कियों को तालीम जरूर दिलवाएं लेकिन हुदूद में। अगर हुदूद से बाहर का मुआमला होगा और दौलत हासिल करना ही मक्सदे जिन्दगी रहा तो मुस्तकबिल में ऐसे ऐसे मसाइल पैदा होंगे जिन से नजात हासिल करना मुशकिल होगा। अभी ऐसी तालीम और ऐसे कोर्सेज़ की शुरूआत है जब यह अपने उरूज पर आए गा और उस के बुरे नताइज सामने आएंगे तब क्या होगा? इन मसाइल पर गौर करना बहुत जरूरी है।

❑❑

निगाह की ग़लती

"निगाह की ग़लती कहीं से कहीं पहुँचा देती है। और यही हाल दूसरे हवास (ज्ञानन्द्रियों) का भी है। इन्सान जिन चीजों को अपने हवास से महसूस करता है उनके बारे में तुरन्त एक राय क़ायम कर लेता है और फिर उसपर इसरार (हठ) करता है जिसके नतीजे में कभी खुद भी ठोकर खाता है और दूसरों को भी इसके नुक़सानात उठाने पड़ते हैं। इन नुकसानात का दायरः कभी इतना बढ़ जाता है कि उस की क्षतिपूर्ति (इज़ालः) भी आसान नहीं होती है।

बिलाल अब्दुल हयी

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

इसराईल : साम्राज्यवाद का एक असली चेहरा

—मियां अली रज़ा

फ़िलिस्तीन की समस्या का समाधान अब इसराईल और अमेरिका के लिए अत्यावश्यक हो गया है, मगर विकट भविष्य में इसके समाधान की संभावनाएं नहीं नज़र आ रही हैं। इसराईल के द्वारा फ़िलिस्तीन पर क़ब्ज़े की योजना 60 वर्ष पूर्व बनायी गयी थी। इसराईल ने फ़िलिस्तीनियों पर अत्याचार की हद कर दी। उन्हें उनके घरों से बेघर किया गया, उनकी हत्याएं की गयीं और जितने भी अत्याचार हो सकते थे किये गये। यहां तक कि इसराईलियों ने बैतुल मक़दिस पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। लेकिन इसराईल आज भी वहीं खड़ा है, जहां 60 वर्ष पूर्व उसे अमेरिका और ब्रिटेन ने ला खड़ा किया था।

इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्व अर्थव्यवस्था यहूदियों के हाथ में हैं, जिसके कारण वे पूरी दुनिया को ब्लैकमेल कर रहे हैं। इसके बावजूद इसराईल इतने लंबे प्रयासों के बावजूद अपने नापाक मक़सद में सफल नहीं हो सका। इसराईन ने निर्दोष फ़िलिस्तीनियों पर जितने अत्याचार किये हैं और कर रहा है, इतिहास में इकसा कोई दूसरा उदाहरण शायद ही मिलता हो।

इसराईलियों का उद्देश्य यह था कि वे बलपूर्वक फ़िलिस्तीनियों को उनके घरों से बेघर कर देंगे और स्वयं पूरे फिलिस्तीन पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। लेकिन इस्लामी संगठनों ने जिस प्रकार इसराईली अत्याचार का जवाब दिया वैसा उन्होंने सोचा भी नहीं था। इसलिए मानवता के इन शत्रुओं को अपनी योजना बदलनी पड़ी। अब वे बल प्रयोग के आधार पर नहीं, छल–कपट के द्वारा उन पर क़ाबू पाना चाहते हैं। अर्थव्यवस्था के साथ–साथ विश्व मीडिया भी यहूदियों के हाथ में है। अब वे मीडिया की मदद से दुनिया भर में फ़िलिस्तीनियों को बदनाम कर रहे हैं। दुनिया भर में उनके ख़िलाफ़ नफ़रत का माहौल बनाना चाह रहे हैं। यहूदियों का उद्देश्य अरब देशों को इस्लामी संगठनों के विरुद्ध खड़ा करना है। अलफ़तह के रूप में इसराईल को कुछ सफलता मिली है। हमास और अलफ़तह के बीच हो रही झड़पों में दोनों ओर से फ़िलिस्तीनी ही निशाना बन रहे हैं। इसराईल चोर दरवाजे से अलफ़तह को वित्तीय सहायता देकर मूकदर्शक बनने का नाटक कर रहा है।

वास्तव में मध्य एशिया में ही अमेरिकी, यहूदी और पश्चिमी नीतियों के लिए बड़ी उर्वरता है। इस लिये ये इसे अपने लक्ष्य के अनुसार बनाने में लगे हुएं हैं। पश्चिम और अमेरिका अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए इसमें अत्यधिक रुचि दिखा रहा है और इसराईल के माध्यम से यहां की शान्ति भंग किये हुए हैं। अमेरिकी और यूरोपीय नीतियों के अनुसार ही इसराईल ने फ़िलिस्तीन का विभाजन किया और उस पर हर प्रकार के अत्याचार को जायज़ ठहराया। अब इसराईल उन अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का भी उल्लंघन करने लगा है, जिनके प्रति उसे प्रतिबंधित किया गया था। ग़ज़्ज़ा में मौलिक अधिकारों का हनन, बिजली और इंधन तक को रोकने की अन्यायपूर्ण कार्रवाई की गयी।

अमेरिका की यहूदी लॉबी मुस्लिम देशों को कमज़ोर करने के काम में लगी हुई हैं। इसी के तहत वह इराक़ को तीन छोट–छोटे टुकड़ों में बांट देना चाहता है ताकि वे कमज़ोर पड़ें। वे एकजुट होने के बजाय तोड़–फोड़ की शिकार रहें। लेकिन इस्लामी जिहादी संगठनों ने अमेरिका की इस योजना को मिट्टी में मिला दिया है। जिहादियों के ही

कारण इसराईल का अब फ़िलिस्तीन में ठहरे रहना कठिन होता जा रहा है। अमेरिका किसी भी हाल में इसराईल को अकेला नहीं छोड़ सकता है, क्योंकि पूरे अमेरिका पर यहूदियों का अत्याधिक प्रभाव है। यहूदियों के कारण ही अमेरिका इसराईल के हर नाजायज अमल में उस का साथ देने को मजबूर है। संयुक्त राष्ट्र की नीतियां भी दोहरे मानदंड की हैं।

अमेरिका की साजिश यही है कि इराक़ हो या कोई भी इस्लामी क्षेत्र, वहां राजनीतिक और साम्प्रदायिक तनावों को हवा दी जाए। जैसे इराक़ में मुसलमानों से टकराव, लेबनान में दो राजनीतिक गुटों को आपस में लड़ा देना, सीरिया और लेबनान को भिड़ा देना, अलफ़तह और हमास का संघर्ष इस प्रकार इन्हें छोटे–छोटे टुकड़ों में बांट दिया जाए, जो परस्पर संघर्षरत रहें और अमेरिका और दूसरे पश्चिमी देश उन पर कंट्रोल प्राप्त कर ले। लेकिन अमेरिका और पश्चिमी देश अपने इन कुत्सित प्रयासों में सफल नहीं हो सके बल्कि उनकी मुश्किलें ही बढ़ती रहीं। अमेरिका ने अरब देशों को इस्लामी जिहादी संगठनों के ख़िलाफ़ भड़काने की बहुत कोशिश की, मगर सफल नहीं हो सका।

ईरान और इस्लामी जिहादी संगठनों पर नित नये प्रतिबंध लगाना इसी सिलसिले की कड़ी थी। ईरान को भी इसी पृष्ठभूमि में लाने का प्रयास जारी है, ताकि अफ़गानिस्तान और इराक़ की तरह अमेरिका वहां भी अपनी मर्ज़ी की सरकार ला सके या फिर फ़िलिस्तीन और लेबनान की तरह प्रत्यक्ष रूप से अपनी पसन्द की सरकार स्थापित कर सके। लेकिन जिस तरह इसराईल को अपने उग्र और आक्रामक रवैये के कारण सफलता नहीं मिली उसी प्रकार अमेरिका अरब देशों को जिहादी संगठनों के विरुद्ध खड़ा करने में सफल नहीं हो सका। अरब देश अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हीं जिहादी संगठनों पर उनका अस्तित्व टिका हुआ है।

❑❑

सारे आलमों के लिये रहमत

"इस्लाम ने रहमदिली, हमदर्दी और इन्सानियत नवाज़ी की जो क़दरें लाज़िम की और फैलाई उन का यह असर पड़ा कि जहाँ जहाँ मुसलमान इन क़द्रों के साथ गये वहाँ की दुनिया बिल्कुल बदल गयी और वह जुल्म व ज़्यादती जो आपस में तब्क़ाती फ़र्क की वजह से या औरत व मर्द के लेहाज़ से या राजा व प्रजा के फ़र्क के लेहाज़ से या आपस में जँगी टकराव के मौक़े पर या महज़ लुत्फ़ व ऐशपसन्दी के मक़सद से जो जुल्म किया जाता था, वह मौक़ूफ़ हो गया (थम गया) और इस्लाम को क़बूल न करने वालों पर भी इन बातों को देख कर कुछ न कुछ असर पड़ा और उनकी बातों की नक़ल किसी हद तक ग़ैर मुस्लिम समाज में भी की जाने लगी, और इन्सान के अलावा दूसरी मख़लूक़ के साथ जुल्म के जो तरीके इख्तियार किये जाते थे मात्र मनोरंजन और खेल के तौर पर, इन्सान और जानवर को कुएं जैसी जगह पर बन्द कर के लड़ाया जाता था और इससे तमाशा देखने वाले आनन्द लेते थे। जानवरों के साथ किसी भी तरह की रहमदिली के ज़रूरत नहीं समझी जाती थी। इन सब में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की आमद और आप की तालीमात व अख़लाक़ से ग़ैर मामूली तबदीली आ गयी। इस तरह आप की आमद, सिर्फ मुसलमानों के लिये ही रहमत नहीं बनी बल्कि इन्सानों के साथ साथ सारी मख़लूक़ के लिये रहमत बनी और इसी की तरफ़ अल्लाह की तरफ़ से कुरआन में इज़हार भी किया गया कि 'हमने आप को सारे आलमों के लिये रहमत बना कर भेजा है'।"

–राबे हसनी–

("रहबरे इन्सानियत" पेज : ४१५)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

इस्लाम का नज़रीय-ए-जंग
हयाते नबवी के हवाले से

मोहम्मद अली रज़ा मिस्बाही

इस्लाम दुनिया में अम्न कायम करने का सबसे बड़ा दाई और मुबल्लिग़ है। वह नहीं चाहता कि कोई किसी को अपने जब्र व तशद्दुद का निशाना बनाए या किसी को ताकत के जोर से उसके पसंदीदा मज़हब को छोड़ने पर मजबूर करे बल्कि वह यह चाहता है कि फितना व फ़साद और जुल्म व सितम का खात्मा करके भटके हुए लोगों को फिर से सीधी राह पर ले आए और बन्दों का टूटा हुआ रिश्ता खुदा से जोड़ दिया जाए और इस्लाम इन पुरअम्न मक़ासिद में कामयाब भी हुआ। दुनिया जानती है कि कौमी भेदभाव, क़बाइली झगड़े, इलाकाई मुखासिमत, नस्ली अदावत, शख्सी वहशत व बरबरियत, शिर्क व बुतपरस्ती जैसे जिहालत के खुराफ़ात का खात्मा सिर्फ़ और सिर्फ़ इस्लामी इंकलाब की वजह से मुमकिन हो सका। अगर मक्का की सरजमीन पर नबी करीम (सल0) ने इंकलाब बरपा न किया होता तो दुनिया हलाकत व तबाही के किस दलदल में फंसी होती बताना बहुत मुश्किल है। ऐसे पाकीज़ा और साफ–सुथरे निशानों को हासिल करने केलिए जंग की भी नौबत आई है मगर इन जंगों पर चिराग पा होना वहशत व बरबरियत की खुली हिमायत होगी। अगर फ़ितना, फ़साद के खात्मे के लिए सैयदना हज़रत ईसा (अलै0) तलवार उठा सकते हैं तो फिर इसी मक़सद की खातिर इस्लाम की जंगी इजाज़त से क़यामत क्यों टूटी पड़ती है।

यहाँ इस बात की वजाहत जरूरी है कि मुफसिदों और जालिमों से इस्लाम ने अगरचे जंग की इजाज़त दी है मगर यह बिल्कुल आखिरी मरहला है वरना वह तो पहले दुश्मन की ईज़ारसानियो और सितम करने पर सब्र की ताकीद व तलकीन करता है। मक्का शरीफ़ में मुसलसल तेरह साल तक मुसलमान कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के जुल्म व सितम बरदाश्त करते रहे मगर उन्होने कभी भी तलवार न उठाई।जुल्म से तंग आकर उन्होंने नबी करीम (सल0) से जंग की इजाजत चाही मगर आप (सल0) ने फ़रमाया 'ऐ मुसलमानों! अभी सब्र करो और अपने हाथ रोके रखो क्योंकि मुझे जंग की इजाजत नहीं मिली है।' लेकिन जब पानी सर से ऊंचा होने लगा तो आप ने खुद भी हिजरत की और अपने सहाबा को भी हिजरत का हुक्म दिया मगर आप ने फिर भी जंग न की, न जंग करने की इजाजत ही दी।

अगर यह कहा जाए कि उस वक्त मुसलमान जंग की पोजीशन में थे ही नहीं, वह जंग कैसे करते तो मै समझता हूं कि यह दावा एक तफसील का मुतक़ाज़ी है वह यह कि शुरू के दिनो में यह बात काबिले तस्लीम है मगर बाद के दौर के लिए यह बात काबिले यकीन नहीं क्योंकि सहाबा की इजाज़त तलबी से यह पता चलता है कि वह बचाव की पोज़ीशन में आ गए थे और शायद इसीलिए नबी करीम (सल0) ने ताकत के न होने से जंग से न रोका बल्कि अल्लाह की तरफ से हुक्म न मिलने को इसकी वजह करार दी।

जब नबी करीम (सल0) हिजरत फरमा कर मदीना तशरीफ ले आए तो दुश्मनों ने यहां भी आप को चैन से रहने न दिया और जोशे ग़ज़ब में वहशत व बरबरियत और जुल्म व जौर की हर हद फांदते चले गए। उस वक्त अल्लाह ने आप को जंग की इजाज़त दी। अल्लाह का इरशाद है,– 'ऐ रसूल! अल्लाह की राह में उन लोगों से जेहाद कीजिए जो आप से लड़ते है और ख्याल रहे इस हालत में भी उन पर ज्यादती न करना।' यानी जंग की यह इजाज़त मुतलक नहीं बल्कि इसके भी कुछ कैद व हुदूद हैं जिनकी रिआयत जरूरी है। इसीलिए नबी करीम (सल0) ने आंखे निकालने और पेट

चीरने पर रोक लगाया, बच्चो औरतों बूढ़ो बीमारों, मज़हबी रहनुमाओं और माजूर लोगों पर तलवार चलाने को मना फरमाया साथ ही सहाबा को हर उस काम से बाज रहने का हुक्म दिया जिससे इंसानी शराफत को कुछ भी ठेस पहुंचती हो। हद तो यह कि जीते हुए इलाके के फलदार पेड़ काटने और बिला जरूरत दूध पीते जानवारों को हलाक करने से मना फरमाया। अगर किसी सहाबी से इस जंगी उसूल की खिलाफ़वर्जी हो जाती तो आप उस पर नाराजगी का इजहार फरमाते। जंगे खैबर के मौके पर कुछ लोग बेकाबू हो गए और लूटमार शुरू कर दी। आप सख्त नाराज हुए और सबको जमा करके इरशाद फरमाया खुदा की कसम! मैंने बार–बार तुम को नसीहत की और हुक्म दिया और बहुत सी चीजों से रोक दिया जिनमें एक गारतगरी भी है। याद रखो! मैं जिन चीजों को तुम पर हराम करता हूं वह भी मुहरमाते कुरआनिया ही हैं और काबिले एहतिसाब हैं। एक और जंग के मौके पर किसी सहाबी ने गलती से तीन काफिरों को कत्ल कर दिया तो आप नाराज़ हुए।

हजार तलाश के बावजूद तारीख के किसी पन्ने पर न हमें कोई ऐसा रहबर व रहनुमा नज़र आता है न कोई ऐसा हाकिम व बादशाह जो सिर्फ तकरीम इंसानियत की खातिर खास जंगी मौके के लिए ऐसे उसूल व कानून मुकर्रर करता हो और उस पर अमल करके दुनिया के सामने एक नमूना छोड़ जाता हो। वक्त के एक नामवर और अ़जीम मुहक्किक अल्लामापीर करमशाह अज़हरी लिखते हैं–

'मुस्तशरिकीन जो इसलाम के नजरियाते जेहाद पर तरह–तरह के एतराज करते हैं वही इंसाफ से बताएं कि दुनिया में कोई ऐसी कौम गुज़री है या आज की मुहज्जब दुनिया में कोई ऐसी कौम है जिसके जंगी कानून में अद्ल व इंसाफ का यूं लिहाज रखा गया हो। आज तो जंग शुरू होती है तो पुरअम्न शहरियों और आबाद बस्तियों को एटम बमों से उड़ा कर रख दिया जाता है और औरतों, मासूम बच्चो, बूढ़ो, बीमारों किसी से दरगुज़र नही की जाती है। अस्पतालों, दरसगाहों, इबादतखानों तक का एहतराम पीछे छोड़ दिया जाता है।'

हालात और वाक्यात पर गौर करने से एक हकीक़त का और इंकशाफ होता है वह यह कि जंगी उसूल व कानून की पासदारी के साथ–साथ मुसलमानों ने सिर्फ बचाव वाली जंग लड़ी है। इसका अंदाजा फरीकैन के मकतूलों की तादाद से बखूबी किया जा सकता है। मुहक़्क़िक मज़कूर लिखते हैं

'दोनो फ़रीक़ों के वह मक़तूल जो जज़ीर–ए–अरब के बाशिंदे थे उनकी तादाद चार सौ चालीस है उन मकतूलों में वह लोग भी शुमार किए गए हैं जिन्हें धोका से कत्ल किया गया था या गलती से कत्ल हुए थे उनमें आप छः या सात सौ यहूदियों को भी शुमार कर लें जिन्हें कत्ल करने का हुक्म हज़रत साद बिन मआज़ ने दिया था जिन्हें खुद यहूदियों ने इस झगड़े में अपना हकम तस्लीम किया था। फरीक़ैन के तमाम मकतूलों की तादाद बशमूल मकतूल बनी कुरैज़ा एक हजार चालीस या ग्यारह सौ चालीस बनती है।'

अगर मुसलमान बदले के जज्बे की तस्कीन या हुसूले माले गनीमत या किसी और मकासिद के तहत जंग करते तो खून–खराबा कर देते मगर यह तादाद बता रही है कि उनकी जंगे उन सल्बी मकासिद से बिल्कुल पाक थी जिनकी तोहमत इस्लामी जंगों पर डाली जाती है।

इस्लामी जंगो की साफ़–सुथरी तस्वीर समझने के लिए नबी करीम (सल0) का यह रहीमाना व करीमाना सुलूक भी देखा जाना चाहिए जो आप ने दुश्मनों और कैदियों के साथ किया था। जंगे बदर के एक कैदी अबू अजीज का यह बयान पढ़िए :–

'मैं मदीना पहुंचा तो मुझे एक अंसारी के हवाले कर दिया गया। सुबह व शाम जब अंसारी के घर वाले खाना खाते तो हुजूर की वसीयत के मुताबिक मुझे तो वह रोटी खिलाते और खुद खजूरों के चन्द दानो पर सब्र करते । जब उनमें से किसी के हाथ में रोटी का टुकड़ा आ जाता तो मुझे पेश कर देते। मुझे बड़ी शर्म महसूस होती। मैं वह टुकड़ा उन्हें देने पर इसरार करता लेकिन वह उस टुकड़े को हरगिज़ न लेते और बजिद होते कि मैं ही उसे खाऊं।'

बदरी कैदियों में से बहुतों को हुजूर ने बगैर फिदिया ही के रिहा कर दिया। उनमें एक शख्स अम्र बिन अब्दुल्लाह बहुत गरीब था। आप की बारगाह में हाजिर होकर अर्ज किया – हुजूर आप जानते हैं कि मैं एक गरीब और मोहताज आदमी हूं कई बच्चियों का बाप भी हूं फिदिया के लिए मेरे पास फूटी कौड़ी भी नही। आप मुझ पर एहसान फरमाइए हुजूर ने उसको आजाद फरमा दिया और सिर्फ यह वादा लिया कि इस्लाम के खिलाफ वह किसी की इमदाद न करेगा। इस हुस्ने सुलूक से मुतास्सिर होकर उसने चन्द शेअर भी कहे जिसमें आप की तारीफ़ व तौसीफ़ की गई है।

फत्हे मक्का के दिन कुरैश हक्का–बक्का थे कि न जाने आज हमारे साथ क्या सुलूक किया जाएगा। क्योंकि उनमें वह लोग भी थे जिन्होंने हुजूर को साहिर शायर, कज्जाब और मजनून कहा था। जबरन आप को मक्का से जिलावतन किया था, वह लोग भी थे जिन्होंने आपके कत्ल की साजिश रची थी। वह सब भी थे जिन्होंने मुसलमानों पर जुल्म व सितम और जोर व जफ़ा के पहाड़ तोड़ने में कोई कसर न छोड़ी थी। अपने जुर्म को देखते हुए उन सब को तलवार से कत्ल किए जाने का तकरीबन यकीन हो चला था। ऐसे आलम में नबी करीम (सल0) ने दिलों को दहला देने वाला एक सवाल फरमाया-ऐ गरोह कुरैश! बताओ आज मैं तुमसे कैसा सुलूक करन वाला हूं? आपकी शाने करीमी के पेशे नज़र उन्होंने अर्ज किया–आप से हम भलाई ही की उम्मीद रखते हैं क्योंकि आप नबी करीम अल नफ्स भाई और हमारे करीम व शफीक़ भाई के फरजंद है और ख़ुदा ने आज आपको कुदरत व इख्तियार भी अता फरमाया है। आप ने आम माफी का एलान करते हुए इरशाद फरमाया– 'आज मेरी तरफ से तुम पर कोई गिरफ्त नही है जाओ तुम सब आजाद हो।'

नबी करीम (सल0) का यही वह रहीमाना व करीमाना सुलूक था जिसने बदतरीन दुश्मनों को भी आपके सामने झुकने पर मजबूर कर दिया और पूरा अरब आप का चाहने वाला हो गया। तलवारों से जिस्म तो झुक सकता है दिलों पर हुकूमत नही हो सकती। लेकिन इस्लामी तारीख का पन्ना–पन्ना इस बात की गवाही देता है कि जो लोग आप के साए से नफरत करते थे वह आप पर जान निछावर करने लगे।

जंग और जंग के बाद हालात कुछ ऐसे होते हैं कि आदमी अपने जज़्बात पर काबू नही रख पाता। ऐसे हालात में अखलाकी कद्रो की धज्जियां उड़ाने में भला क्योंकर झिझक महसूस हो सकती है खासकर ताकतवर कमजोर के साथ और फातेह मफतूह के साथ क्या कुछ नही कर सकता है। हिटलर का जुल्म व सितम, मूसोलीनी की वहशत व बरबरियत, हिरोशिमा की तबाही, नागासाकी की बर्बादी और इराक़ व अफ़गानिस्तान में कई लाख औरतों, बच्चो, मजहबी रहनुमाओं और बेगुनाह शहरियों का कत्लेआम इसकी जिंदा और ताजा मिसाले हैं लेकिन दुश्मनों और हरीफों के साथ नबी करीम (सल0) का वह हुस्ने सुलूक बता रहा है कि इस्लामी जंगों का मकसद न लूटमार है न गारतगरी न जज्बा–ए–इंतकाम की तस्कीन बल्कि इसका मकसद सिर्फ कयामे अम्न की राहों में आई रूकावटों को दूर कर देना है।

जो ईसाई दानिशवर और मुस्तशरिकीन लोग इस्लामी जंगों पर लूटमार, गारतगरी की तोहमत रखते हैं वह तारीखी हकायक से आंख मूंद रहे है। क्या दुनिया की तारिख में किसी ऐसै लुटेरे और गारतगर का भी सुराग मिलता है जो खुद मामूली खाने पर जिंदगी गुजार लेता हो मगर कैदियों के लिए अपने से अच्छा खाने का इंतजाम रखता हो, अपने मकतूलों की दियत अदा करता हो, पूरब व पच्छिम में जिसके अखलाके करीमाना के गुलगुले सुनाई देते हो और लोग उसकी गुलामी को अपने लिए इफ्तिखार की वजह समझते हों।

जब हम इस्लामी जंग व जेहाद के नतीजों पर गौर करते हैं तो लूटमार की भरपूर तरदीद होती है। जजीर–ए–अरब में एक मरकजी हुकूमत का कायम हो जाना, कबीलों में बटे हुए अरबों का एक वहदत में जमा हो जाना, जंग व जिदाल के भड़कते शोलों में जलते हुए समाज का अम्न व शान्ति का गहवारा बन जाना, क्या लूटमार की देन है। गुलामी की जगह आजाद जिंदगी,

जिल्लत की जगह इज्जत, जुल्मत के बदले नूर, जिहालत के बदले इल्म,वहशत के बदले मोहब्बत जैसे खुशगवार असरात क्या गारतगरी की देन है? नही और हरगिज नही बल्कि हक़ीक़त यह है कि इस्लाम ने जिहालत के तमाम वहशियाना कामों को खत्म करके जंग का नया फार्मूला पेश किया जो इस्लामी तारीख में 'जेहाद' के नाम से जाना जाता है जिसकी हकीक़त अम्न की खातिर मसालेहाना इकदाम के सिवा और कुछ नही। इसलिए बंजर जमीन भी लहलहा उठी और कंटीले पौधों की जगह गुलाब की खेती होने लगी।

एक एतराज जो यहूदियों या दूसरे दानिशवरों की तरफ से किया जाता है कि बनी कुरैज़ा के तमाम मर्दो का कत्ल बड़ा सख्त हुक्म था। अगर इस्लाम वाकई सुलह–सफाई का मजहब है तो यह फैसला इसकी नफी करता है मगर यह एतराज सिवाए जोरे बयानी के और कुछ नही। अगर वह हकीकतें हाल की तहकीक़ करें तो उन्हें यह तस्लीम करने पर मजबूर होना पड़ेगा कि अगरचे यह हुक्म सख़्त था मगर था आदिलाना और मुंसिफाना।

नबी करीम (सल0) जब मदीना तशरीफ़ लाए तो उस वक्त मदीना में यहूदियों के तीन कबीले आबाद थे। बनू नज़ीर, बनू कुरैज़ा और बनू कीनकाअ। आप ने इन सबसे सुलह सफ़ाई का मामला किया जिसकी वजह से उनकी जान व माल, इज्जत व आबरू और दूसरी तमाम चीजों के तअल्लुक से मुकम्मल आजादी दी गई। मगर उन्होंने इस समझौते की कभी कोई कदर न की और हरदम इस्लाम के खिलाफ़ साज़िश में लगे रहे। जब खंदक के मौके पर उन्होंने खुल्लम खुल्ला वादाखिलाफी की तो नबी करीम (सल0) ने बनू कुरैज़ा की तरफ तहकीके हाल के लिए एक वफ्द भेजा। जब वफ्द वहां पहुंचा तो मंजर ही अजीब था। तलवारों की धारें तेज़ की जा रही थी, तीर और भाले दुरुस्त किए जा रहे थे। सहाबा ने उनको हुजूर से किया हुआ समझौता याद दिलाया मगर उन्होंने गुरूर के साथ किसी भी किए समझौते का इंकार कर दिया।

कुफ्फ़ार व मुशरिकीन और अरब के दूसरे कबाइल से मिलकर उन्होंने यह प्लान बनाया था कि मुश्तरका तौर पर हमला करके मुसलमानों की ईट से ईट बजा दी जाए। बाहर से कुरैश और दूसरे कबाइल हमला करे और अन्दर से बनू कुरैज़ा वग़ैरह। अल्लाह ने इस जंग में मुसलमानों को फतेह दी और वह सब हारे। बनी कुरैज़ा का यह जुर्म इतना संगीन था कि दुनिया की किसी भी अदालत में उसे काबिले माफ़ी नही ठहराया जा सकता। अगर वह कामयाब हो जाते तो मुसलमानों का क्या हश्र होता। क्या उन्हें एक एक करके कत्ल न कर दिया जाता, क्या उनके बच्चो और औरतों को गुलाम और लौंडी न बना लिया जाता ? इंसानी बदन में जो हिस्से कैंसर से बेकार हो जाएं उनको काट देने में ही भलाई है। यह कैंसर जदा कबीला इस सजा का मुस्तहक़ था जो उसे दी गई। जो लोग ज़ालिमों पर रहम व करम करते हैं वह मज़लूमों पर और जुल्म व सितम करने के कुसूरवार होते हैं।

बनू कुरैज़ा के हम मज़हब भाइयों को यह भी ख़्याल रखना चाहिए कि इस संगीन जुर्म का यह फैसला हजरत साद बिन मआज़ ने किया था और उनके हकम बनाने का फैसला भी खुद उन्हीं का था। साद का उन लोगों से दोस्ताना मेलजोल भी था। एक मुंसिफ अपना खून बहा सकता है मगर इंसाफ का खून नही कर सकता। इस आदिलाना फैसले पर एतराज करने वालों को अपने पैग़म्बर हज़रत मूसा (अलै0) का यह किरदार भी नज़र में रखना चाहिए।

जब तू किसी शहर से जंग करने को उसके नज़दीक पहुंचे तो पहले उसे सुलह का पैगाम देना और अगर वह तुझ को सुलह का जवाब दे और अपने फाटक तेरे लिए खोल दे तो वहां के सब बाशिंदे तेरे बजजगुज़ार बनकर तेरी ख़िदमत करें और अगर वह तुझ से सुलूह न करें बल्कि तुझ से लड़ना चाहें तो तू उनका घेराव करना और जब अल्लाह उन्हें तेरे कब्जे में कर दे तो तू वहां के हर मर्द को तलवार से कत्ल कर डालाना लेकिन औरतों और बाल–बच्चों और चौपायों को क़त्ल करने से रोका है, यहां तक कि फलदार दरख़्तों को काटने से भी रोका है।

(जदीद मरकज़ के शुक्रिये के साथ)

❑❑

मानव शरीर : कुछ तथ्य

डॉ० राजीव लोचन

- शरीर की सबसे स्ट्रांग मसल (मांसपेशी) जीभ है।
- शरीर के सबसे छोटी मांसपेशी स्टेपीडियस है। यह मध्य कान की स्टैप्स हड्डी को नियंत्रित करने वाली मांसपेशी है। इसकी लंबाई 0.05 से0मी0 से कम होती है।
- शरीर में सबसे बड़ी मांसपेशी ग्लूटियस मैक्सीमस है शरीर की सबसे लंबी मांसपेशी सरटोरियसा है। यह गुर्दे के नीचे पैल्विस से होती हुई जांघ में घुटने के नीचे तक जाती है।
- छींकते समय मनुष्य की दोनों आंखें कभी खुली नहीं रह सकती।
- मनुष्य के मस्तिष्क का भार पुरुषों में 1380 ग्राम से 1.5 किलोग्राम तक होता है। पूरे मस्तिष्क की नाड़ियां गिनें तो दस अरब से 15 अरब तक होंगी।
- शरीर का सबसे बड़ा अंग त्वचा है।
- स्वस्थ मनुष्य का हृदय 24 घंटे में 92965 बार धड़कता है।
- फीमर शरीर की सबसे लंबी मज़बूत और भरी हड्डी होती है। यह मनुष्य की लंबाई की 27.5 प्रतिशत लंबी होती है।
- शरीर के कुल भार का लगभग 65 प्रतिशत जल होता है।
- दुनिया की सबसे ख़तरनाक बीमारी मलेरिया है। जिससे हर साल 1. 5 मिलियन लोग मरते हैं।
- राइट हैंडेड लोग लैफ्ट हैंडेड लोगों से लगभग 9 साल ज्यादा जीते हैं।
- प्रतिदिन मुख से स्रावित होने वाली लार की मात्रा 800 मि0ली0 से 1500 मि0ली0 तक होती है।
- लगभग 2.5 घंटे में मनुष्य का आमाशय स्वित हो जाता है।
- शियाटिक नर्व (गर्द्ध सी नाड़ी) गर्द्ध सी शरीर की सबसे बड़ी तंत्रिका है।
- मनुष्य के द्वारा श्वांस छोड़ते समय शरीर से बाहर निकलने वाली वायु में ऑक्सीजन की 16 प्रतिशत मात्रा होती है।
- स्वस्थ मनुष्य के शरीर का तापमान 98.4 डिग्री फारेनहाइट होता है।
- श्वास लेते समय हवा के साथ 3 प्रतिशत कार्वन डाईऑक्साइड शरीर में जाती है।
- शरी में रक्त परिभ्रमण में कुल 22 सेकंड लगते हैं।
- गुर्दे का आकार 11 सेमी0 लंबा 6 सेमी0 चौड़ा व 3 सेमी0 मोटा होता है और प्रतिदिन 1.3 ली0 रक्त को फिल्टर करते हैं, 18.50 ली0 रक्त प्रतिदिन गुर्दों से होकर जाता है।
- शरीर से प्रतिदिन लगभग 2.6 ली0 जल उत्सर्जित हो जाता है।
- संसार के किसी भी दो मनुष्य की उंगुली छाप (फिंगर प्रिंट) एक समान नहीं होतें यद्यपि उनका चेहरा और स्वभाव समान हो सकता है।
- रक्त का पी0एच0 (पावर ऑफ हाइड्रोजन) 7.35 होता है। जबकि मूत्र का 6.00 और आमाशय रस का 1.4 तथा अग्नाशय रस का 8.5।
- सांप का जहर पीने से मनुष्य की मृत्यु नहीं होती। सांप का ज़हर जिसे वैननम कहते हैं, जब तक मानव रक्त में नहीं मिलता, घातक नहीं होता। यदि मुंह और आमाशय में कोई व्रण या क्षत हो तो यह प्राण घातक हो सकता है।
- मनुष्य में वायरस का संक्रमण श्वसन क्रिया, त्वचा, यौनांगों के अतिरिक्त नेत्र की श्लैष्मिक कला (म्यूकस मेंम्ब्रेज) के माध्यम से भी हो जाता है।

❑❑

कुरआन की पारिभाषिक शब्दावली

डॉ0 मुहम्मद अहमद

सब्र–धैर्य, दृढ़ता, अविचल होना, जमाव।

सब्र का शाब्दिक अर्थ है रोकना, बाँधना। सब्र के अर्थ में बड़ी व्यापकता पाई जाती है। सब्र संकल्प की वह दृढ़ता और मन की वह अविचलता है जिसके कारण आदमी अपने चुने हुए मार्ग पर आगे बढ़ता चला जाता है, किसी हानि का भय उसे मार्ग से हटा नहीं सकता और न ही मन की कोई इच्छा उसे विचलित कर सकती है।

समूद– अरब की प्राचीन जातियों में से एक प्रसिद्ध जाति इस जाति का उल्लेख सीरिया के शिलालेखों में भी मिलता है। यूनान, स्कंदरिया, और रूम के इतिहासकारों और भूगोल के लेखकों ने भी इस जाति का उल्लेख किया है।

यह जाति अरब के उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में बसती थी। आज इस क्षेत्र को 'अलहिज्र' कहते हैं। मदीना और तबूक के बीच एक स्थान 'मदायने–सालेह' पड़ता है। प्राचीन काल में इसे हिज्र कहते थे और यही समूद की राजधानी थी। हज़ारों एकड़ के क्षेत्र में आज भी ऐसे भवन मौजूद हैं, जिनका निर्माण समूद ने पहाड़ों को काट–काटकर किया था।

समूद के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह ने हज़रत सालेह को नबी बनाकर भेजा। किन्तु यह जाति राह पर न आई और अल्लाह ने इसे विनष्ट कर दिया।

सलवा– देखिए 'मन्न'।

सहाबा– साथी, हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के साथी।

सहीफ़ा– लिखित पर्ण। बहुवचन के रूप में (सुहुफ़) किताब के लिए आता है। किताब पन्नों ही का समूह होता है।

साबिई– इस नाम के दो समुदाय प्राचीन काल में थे। एक हज़रत यह्या (अलै0) का अनुयायी था। इसके लोग 'अल जज़ीरा' के भू–भाग में अधिक पाए जाते थे। दूसरा गिरोह उन नक्षत्रपूजकों का था जो उपने धर्म का सम्बन्ध हज़रत शीस (अलै0) और हज़रत इदरीस (अलै0) से जोड़ते थे। इन लोगों का केन्द्र 'हर्रान' था। इराक़ के विभिन्न भगों में ये लोग फैले हुए थे। अनुमान है कि कुरआन में साबिई से अभिप्रेत पहला ही गिरोह है, क्योंकि कुरआन के अवतरण काल में दूसरा गिरोह इस नाम से नहीं जाना जाता था।

सिद्दीक़– अत्यंत सच्चा, निष्ठावान, सत्यवान। जिसमें सत्यप्रियता और सत्यवादिता के अतिरिक्त और कोई दूसरी भावना न पाई जाती हो। जो सत्य और न्याय का साथ हर हाल में दे सके। जो चरित्र का महान हो और स्वार्थपरता से बहुत दूर हो।

सूर– सूर बिगुल या नरसिंघा को कहते हैं। कुरआन में जिस सूर का उल्लेख किया गया है उसकी वास्तविकता का सही ज्ञान अल्लाह ही को है।

सूरा (सूरह)–(बहुवचन–'सूरतों')। कुरआन छोटे–बड़े 114 भगों में विभक्त है, जिनमें से प्रत्येक भाग को सूरा कहते हैं। प्रत्येक सूरा अपनी जगह पूर्ण होती है। किन्तु इसी के साथ अपनी अगली–पिछली सूरतों से गहरा संपर्क भी होता है।

सूरा शब्द 'सूर' से निकला है जिसका अर्थ होता है–शहरपनाह, प्राचीर, नगरकोट। इसका बहुवचन 'सुवर' होता, किन्तु हिन्दी नियम के अनुसार इस किताब में सूरतें या सूरतों लिखा गया है।

हक़– 'हक़' मौजूद और क़ायम को कहते है। फिर इसमें कई अर्थों का समावेश हुआ है–(1) जिसका होना सत्य हो (कुरआन,38:64)। (2) नैतिक दृष्टि से जो अपेक्षित हो (कुरआन,51:19)। (3) जो स्पष्ट और बुद्धिसंगत हो।

(कुरआन,2:71,6:62)

अल्लाह और क़ियामत पहले और तीसरे अर्थ के अनुसार हक़ है। इनसाफ़ और न्याय को दूसरे अर्थ में हक़ कहा जाएगा। तीसरे अर्थ के अनुसार हिकमत, तत्व दर्शिता (wisdom)

हम्द– गुणगान, प्रशंसा, ईशप्रशंसा। किसी के सद्गुणों और खूबियों का प्रेमपूर्वक वर्णन। हम्द अल्लाह के आगे कृतज्ञता प्रकट करने का एक उत्तम ढंग है। इसी लिए हम्द को शुक्र से भी अभिव्यंजित करते है।

हज(हज्ज)– इसका अर्थ होता है इरादा करना, ज़ियारत। परिभाषा में हज एक इबादत है जिसमें आदमी काबा के दर्शन का इरादा करता है और मक्का पहुँचकर उन कृतियों का पालन करता है जिनका आदेश दिया गया है। हज वास्तव में इस बात की घोषणा है कि हमारा प्रेम, श्रद्धा, पूजा और बन्दगी सब अल्लाह ही के लिए है। हज करने से मानव–हृदय पर अल्लाह की बड़ाई और उसके प्रेम की छाप स्थायी रूप से पड़ जाती है।

हरम– प्रतिष्ठित स्थान, आदर योग्य मकका का विशेष भू–भाग। हरम की सीमा में बहुत–सी बातें, जो हरम की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हैं, वर्जित हैं।

हराम– अवैध, वर्जित, निषिद्ध। इस्लाम ने जिनका निषेध किया हो, जैसे शराब पीना, ब्याज खाना आदि।

हलाल– वैध, अवर्जित, जो इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुकूल हो।

हवारी– सच्चा साथी, सहायक। हज़रत ईसा मसीह (अलै0) के साथियों की उपाधि। उर्दू बाइबिल में इसके लिए 'शागिर्द' शब्द प्रयुक्त हुआ है। बाद में उनके लिए 'रसूल' (Apostles) की उपाधि प्रचलित हो गई। क्योंकि हज़रत ईसा मसीह धर्मप्रचार हेतु उन्हें विभिन्न स्थानों पर भेजते थे। कुरआन ने उन्हें हवारी कहा। हवारी 'हौर' से बना है। 'हौर' का अर्थ होता है सफ़ेदी। धोबी को हवारी इसी लिए कहते हैं कि वह कपड़े को धोकर सफ़ेद कर देता है। खालिस और शुद्ध चीज़ को भी हवारी कहते है। खालिस दोस्त और निस्स्वार्थ साथी को भी हवारी कहते हैं।

हिकमत(Wisdom)–तत्वज्ञान, विवेक, तत्वदर्शिता। हिकमत का मूल अर्थ है फ़ैसला करना, फिर सूझबूझ की उस शक्ति को भी हिकमत कहते हैं जिसके द्वारा आदमी फैसले करता है। उस शक्ल को भी हिक्मत से अभिव्यंजित करते हैं जो सत्यानुकूल निर्णयों का सोत्र है। इस के अतिरिक्त चरित्र की पवित्रता को भी हिकमत के लक्षणों में से माना जाता है।

हिजरत– स्वेदश त्याग, अल्लाह की राह मे घर बार छोड़ना, नबी सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम का मक्का छोड़ कर मदीने को प्रस्थान करना।

हिदायत– (Guidance) मार्ग दर्शन, रास्ता दिखाना, सीधे मार्ग पर लाना, सीधे मार्ग पर चलाना, जीवन यापन का वह तरीका जिस पर चल कर आदमी अपने लोक परलोक का भला कर सके। 'कुरआन' मे इस के लिये 'हुदा' शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिस के कई अर्थ होते हैं, किन्तु उन में परस्पर गहरा सम्बन्ध पाया जाता है।

❑❑

मिर्ज़ा क़ादियानी की

बकवास

"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि वल्लज़ीन मअहु अशिद्दाउ अलल्कुफ़्फ़ारि रहमाउ बैनहुम" यह अरबी इबारत कुर्आन मजीद में सूर-ए-फ़त्ह की 29वीं आयत का हिस्सा हैं, इस में बताया गया है कि मुहम्म अल्लाह के रसूल हैं (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जो लोग उनके साथ है यअनी सहाबा (रज़ि0) वह कुफ्फार पर सख़्त हैं और बाहम एक दूसरे पर नर्म हैं। लेकिन बुरा हो झूंठे का मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी रूहानी खजाइन जिल्द 18 पेज 207 पर यह आयत लिख कर बकता है कि "इस वह्ये इलाही में मेरा नाम मुहम्मद रखा गया और रसूल भी कहा गया है।" कादियानियों का अकीदा है कि मिर्ज़ा मआज़ल्लाह अल्लाह के रसूल हैं मिर्जाई यह अकीदा भी रखते हैं कि मआज़ल्लाह पहले मुहम्मद कामिल न थे मिर्ज़ा कामिल मुहम्मद हैं लिहाजा मिर्ज़ा कादियानी और उनके मिर्जाई सब के बारे में उलमा का फैसला है कि यह इस्लाम से खारिज हैं।

❑❑

"हम और हमारा शरीर"

— डॉ0 मुजफ्फर अली

- हमारी हड्डियां कंकरीट से कहीं अधिक मज़बूत तथा ग्रेनाइट से कठोर किन्तु इनसे हलकी होती हैं। जबड़े की हड्डी हमारे शरीर की सर्वाधिक कठोर हड्डी होती है जो 280 किग्रा से भी अधिक वजन सहन कर सकती है।
- हमारे शरीर में 40 प्रतिशत वज़न मांसपेशियों का होता है। सबसे बड़ी मांसपेशी कूल्हे में तथा सबसे छोटी कान में होती है। सबसे मज़बूत मांसपेशी जीभ की होती है।
- हमें हंसने के लिए 17 स्नायुओं का प्रयोग करना पड़ता है जबकि रोने के लिए 43 स्नायु काम में आते हैं।
- हमारी आंखें 17000 अलग–अलग रंगों को पहचान सकती हैं। पलक झपकने के समय को जोड़ने पर यह ज्ञात होता है कि हम रोज़ 30 मिनट आंखें बन्द रखते हैं।
- हम अपने जीवन भर में लगभग 16000 गैलन पानी पी जाते हैं।
- रात को सोने के दौरान हमारा वजन औसतन 11 औंस घट जाता है।
- हमारे शरीर में 365 जोड़ होते हैं।
- मनुष्य के शरीर में कोरोमन्स नामक सुगन्ध होती है, इसी सुगन्ध से कुत्ते मनुष्य का रूमाल पहचानते हैं।
- मनुष्य का हृदय 24 घंटे में 106560 बार धड़कता है।
- मनुष्य 24 घंटे में 21000 बार सांस लेता है।
- स्वस्थ मनुष्य के शरीर में 6 से 8 लीटर खून पाया जाता है।
- मनुष्य के हृदय का वज़न 10 औंस होता है।

❑❑

एअ़लान

कई हमदर्दों के ख़त आए कि 'सच्चा राही' सात साल पहले जारी हुआ था तब से अब तक खासी गरानी बढ़ चुकी है लिहाजा इस की सहयोग राशि बढ़ा देनी चाहिए। ऐसा करना जरूरी मअ़लूम हुआ अतः एअ़लान किया जाता है कि मार्च 2009 से इस का वार्षिक सहयोग 120 रु0 होगा तथा एक पर्चा 12 रु0 का होगा।

(सम्पादक)

तपता....

यही आग कभी जलाती है और कभी खुदा के हुक्म से ठण्डी होकर गुलज़ार बन जाती है। आग का काम जलाना है यह खुद जल कर किसी का खाना पकाये पेट की आग बुझाये तो रहमत है और किसी का घर जलाये किसी इंसान को जलाये किसी जानदार को जलाये तो अभिशाप। छोटे बच्चों के लिए तपता ख़तरे से खाली नहीं जिन के चिंगारी से खेलते–खेलते अपने आप को जला लेने की संभावना बराबर बनी रहती है। छोटे बच्चों की शिक्षा–दीक्षा का उल्लेख करते हुए एक मनोवैज्ञानिक ने क्या पते की बात कही है जो बच्चा तपता की चिंगारी से बार बार खिलवाड करता हो और मना करने से न मानता हो उसे एक बार आग को छू लेने दीजिए फिर वह उम्र भर कभी नहीं भूलेगा कि आग जलाती है।

एक तपता ऐसा है जिस से इस दुनिया का वजूद कायम है वह सर्द पड़ जाये तो मानव सभ्यता के विकास की गति धीमी पड़ जाये, प्यार व मोहब्बत की बातें खत्म हो जाये, ज़िन्दगी की चहल पहल समाप्त हो जाये कोई किसी का ग़मख्वार न रह जाये सुख–दुःख का एहसास खत्म हो जाये, नाते रिश्ते बाकी न रह जायें अपने और पराये का फ़र्क मिट जाये; और अगर यह तपता, यह अँगीठी ठण्डी पड़ जाये तो इस धरती पर शून्य शान्ति और सन्नाटा के अलावा कुछ भी बाकी न रहे, और यह है दिल की अँगेठी, मन का तपता।

❑❑

जग नायक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

इनसान के मूरिस आ़ला (वंश प्रवर्तक) अलैहिस्सलाम–

इस ज़मीन और आसमान और पूरी काइनात (संसार) के बनाने वाली ज़ात अल्लाह तआ़ला ने यह ज़मीन और आसमान बना कर उसमें रहने और उससे फ़ाइदा उठाने वाली मख़लूक़ात (प्रांण वर्ग) पैदा की, इनमें सबसे अहम (महत्तव पूर्ण) और बड़ी मख़लूक़ इनसान को बनाया, इनसानी मख़लूक़ के लिए सबसे पहले एक आदमी को मिट्टी से बनाया, फिर उनके साथ रहने और एक दूसरे से मिलकर ख़ानदान बनाने के लिये उन्ही से उनकी बीवी को पैदा किया, फिर उन दोनों से नस्ले इन्सानी (मानव वंश) स्टेप बाइ स्टेप सारी दुनिया में फैली और इस नस्ले इन्सानी को इस ज़मीन के मआ़मलात के अन्जाम देने की ज़िम्मेदारी सौंपी और ज़मीन में इन्सान की ज़रूरत का सारा सामान पैदा किया कि इन्सान अपनी अक़्ल से जो उसके पैदा करने वाले और मालिक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दी गई है, अपनी ज़रूरत के मुताबिक सामान निकाले और फिर उसको अपनी ज़रूरत की चीज़े बनाने का तरीक़ा बताया और हुक्म दिया कि यह सब चीज़े और ज़िन्दगी तुमको दी गई है ताकि तुम उससे फ़ाइदा उठाओ, लेकिन ज़मीन पर तुमको अच्छा बनकर रहना है और अपने पालनहार के हुक्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारना है, अगर ग़लत काम करोगे तो फिर तुमको सज़ा दी जाएगी।

इनसान के मूरिस (मूल पुरूष) और पहले इनसान हज़रत आदम को जब पैदा किया तो उनको शुरू में आसमान पर सबसे ज़ियादा राहत की जगह जन्नत में रखा, उनसे पहले अल्लाह तआ़ला एक दूसरी मख़लूक़ (सृष्टि) जिन्नात को पैदा कर चुका था। और उनमें से एक फ़र्द (व्यक्ति) इबलीस का जो देखने में बहुत इबादत करने वाल बनदा हो गया था, अल्लाह तआ़ला ने उसकी नेकी के बदले में उसको पहले से जन्नत में ठैरा रखा था लेकिन उसने यह ग़लती की जब आदम अलैहिस्सलाम को पैदा करके अल्लाह तआ़ला ने बड़ी इज़्ज़त दी और जन्नत में रखा तो उनसे इबलीस को जलन हुई कि उसके होते हुए इस नई नस्ल के इनसान को इतना सम्मान क्यों दिया गया ? और जब अल्लाह तआ़ला ने सबको हुक्म दिया कि सब आदम की तआ़ज़ीम (आदर) में आदम के सामने झुक जाएं तो फ़रिशते जैसी आसमानी मख़लूक़ अपने रब के हुक्म की फ़ौरन तआ़मील की लेकिन इबलिस ने मानने से इन्कार किया और घमन्ड का तरीक़ा एख़तियार किया, इस नाफ़रमानी और घमन्ड पर उसको अल्लाह ने जन्नत से निकाल कर नीचे ज़मीन पर उतारदिया और अपनी रहमत से दूर कर दिया, इबलीस ने अपनी इस ज़िल्लत (अनादर) का बदला आदम से लेने के लिये आदम और उनकी बीवी हज़रत हव्वा को जन्नत के एक ऐसे पेड़ के फल खाने पर तय्यार किया जिसके पास जाने से अल्लाह तआ़ला ने शुरू ही से उन्हे रोका था और फ़रमाया था कि जन्नत के हर पेड़ पौदे से फ़ाइदा उठाना लेकिन उस पेड़ के करीब न जाना, शैतान ने समझा बुझा कर कुछ तोड़ कर खाने की रग़बत (चेष्टा) दिलाई और उसका बड़ा फ़ाइदा बताया और किसी तरह यक़ीन दिलाकर कि इस पेड़ के फल खाने में कोई खास नुक़सान नहीं है और फ़ाइदा बहुत है, इस तरह उनसे नाफ़रमानी करादी, अल्लाह तआ़ला हज़रत आदम से नाराज़ हुआ कि हमारे रोकने के बाद भी तुमने यह हरकत की और सज़ा के तौर पर उनको भी जन्नत की फ़िज़ाओं से निकाल कर आसमान से नीचे भेज दिया, इबलीस अपनी नाफ़रमानी पर जमा रहा, मआ़फ़ी तक नहीं मांगी, चुनाँचि उसको और उसकी औलाद को हमेशा के लिये नालाएक़ और मरदूद (धुतकारा हुवा) करार दे दिया गया।

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

– इदारा

प्रश्न : मैं एक हास्पटिल में तन्ख्वाह पर काम करता हूँ, जज्वा बच्चा विभाग से सम्बन्ध है, बच्चा पैदा होने पर उस के घर वाले कभी खुद से खुशी में इनआम देते हैं कभी स्टाफ की मांग पर कुछ रकम प्रस्तुत करते हैं, फिर वह रकम स्टाफ में तक्सीम होती है उस रकम का लेना कैसा है?

उत्तर : आप को स्पताल की जानिब से तन्ख्वाह मिलती है लिहाजा अगर स्पताल की जानिब से इनआम व इक्राम लेने पर पाबन्दी नहीं है और लोग बखुशी इनआम देते हैं तो उस के लेने में कोई हरज नहीं है। लेकिन मुतालबा करने पर अगर घर वालों को नागवारी नहीं है खुश होकर देते हैं तो उस के लेने में भी कोई हरज नहीं है लेकिन अगर घर वालों को नागवारी है या गुरबत के सबब मजबूरी है तो मुतालबा कर के लेना नाजाइज है और इनआम न देन पर उन के काम में कोताही करना नाजाइज और हराम है।

प्रश्न : हमारे यहाँ कुछ लोग सूरज डूबने से पहले दुआ मांगने का एहतिमाम करते हैं और कहते हैं कि इस वक्त दुआ कबूल होती है जब कि कुछ लोगों का कहना है कि यह बिदअत है, सही हुक्म से आगाह फरमाईय।

उत्तर : हदीस में आता है कि अजान व इकामत के दार्मयान दुआ कबूल होती है रही बात सूरज गुरूब होने से पहले की तो इस सिल्सिले में कोई रिवायत नज़र से नही गुजरी। वैसे कोई भी वक्त ऐसा नहीं जिस में दुआ मांगना मना हो इस लिये सूरज डूबने से पहले भी दुआ की जा सकती है। अलबत्ता उस का बहुत जियादा एहतिमाम व इल्तिजाम करना, दूसरों को उस अल्तिजाम पर उभारना जरूर बिदअत कहलाए गा इस लिये कि हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं फरमाया कि गुरूब से पहले एहतिमाम से दुआ किया करो।

प्रश्न : इस साल हज्ज के दौरान हाजियों की कसरत के सबब वहाँ के मुअल्लिमीन ने एअलान कर रखा था कि 11,12 जिल्हिज्ज को सुब्ह से रमी की जा सकती है चुनांचि बेशुमार लोगों ने 11,12 जिल्हिज्ज को ज़वाल से पहले रमी की उन की रमी का क्या हुक्म है?

उत्तर : हनफी मसलक के मुताबिक 11,12 ज़िल्हिज्ज की रमी जवाल से कब्ल मुअतबर न होगी क्योंकि इन दोनों दिनों में रमी का वक्त जवाल के बअ़द शुरूअ होता है। तर्क रमी की सूरत में दम वाजिब होगा।

(मुफ्ती) मुहम्मद जफर आलम नदवी

तहकीक से मालूम हुआ कि सऊदिया के उलमा ने जब देखा कि रमी की भीड़ में लोगों की जानें गईं तो उन्होंने फत्वा दिया कि 11,12 को भी जान को खतरे से बचाने के लिये कब्ल ज़वाल रमी की जा सकती है लेकिन तलाश के बावजूद लिखा या छपा फत्वा मिल न सका, अलबत्ता बअ़ज़ अस्हाबे इम्ल ने बताया कि जान को खतरे से बचाने के लिये फत्वा दिया गया था लेकिन अब चूंकि रमी की जगह तीन मंजिला कर दी गई है लिहाजा अब रमी जवाल से पहले न करना चाहिये।

विजारतुरशुऊनुलइस्लामिया वल औकाफ वददअ़वा वलइर्शाद (सऊदी अरबीया) की जानिब से 1429 में छपी ताजा किताब दलीलुहाज्ज.... पृष्ठ 27,28 पर यह इबारत है : तीनों जमरात की रमी दो दिन या तीन दिन जो मिना में (दस के बअद) बाकी रहेंगे जवाल के बअ़द करें– आगे है कि मरीज और जईफ के लिये रमी करने के लिये नाइब बनाना जाइज है।

प्रश्न : आज कल हज्ज के ज़माने में हाजियों की कसरत के सबब हरमे मक्की में जमाअत की नमाज में औरतों के मुहाजात से बचना ना मुम्किन हो गया है। लिहाजा औरतो के मुहाजात मे पढ़ी गई नमाजों का क्या हुक्म है?

उत्तर : मस्जिदे हराम में औरतें अगर मर्दों के सामने या दाएं बाएं हो तो ब सबब मजबूरी नमाज हो जाए गी। (मुफ्ती) मुहम्मद जफर

आलम नदवी (दारुल इफ्ता नदवतुलउलमा) फिर भी देखा गया कि बअज सऊदी शुयूख नमाज से कुछ पहले औरतों को मर्दों के बीच से निकाल कर औरतों के मजमूअ में पहुंचाते रहे लिहाजा जिस हद तक हो सके यह कोशिश जारी रहना चाहिये और औरतों को इस में खुशदिली से तआवुन करना चाहिये।

(अनुवादक)

प्रश्न : कुछ लोग शुतुरमुर्ग की चर्बी बेचते हैं और उन का कहना है कि यह गठिया के मरज में बहुत मुफीद है। इस चर्बी का इस्तेअमाल कैसा है?

उत्तर : शुतुर मुर्ग हलाल है उस की चर्बी पाक है जब कि जब्ह किये हुए शुतूर मुर्ग की हो, मुर्दार की चर्बी नापाक होगी, पस ज़ब्ह किये हुए शुतुर मुर्ग की चर्बी खाई भी जा सकती है और जिस्म पर लगाई भी जा सकती है। रही नापाक चर्बी तो अगर पाक चर्बी ना मिले और तबीब का मशवरा उस के लगाने का हो तो जिस्म पर लगा सकते हैं, मगर नमाज़ के लिये जिस्म पाक करना होगा।

प्रश्न : किसी बुजर्ग की कब्र पर हाजिरी का क्या तरीका है, क्या कब्र को गिलाफ पहनाना और उस पर चढ़ावा चढ़ाना, चढ़ावे की नज्र मानना, साहिबे कब्र से हाजत तलब करना, कब्र पर चादर चढ़ाना, कब्र को सजदा करना यह सारे काम जाइज हैं?

उत्तर : सब से पहले यह समझें कि बुजर्ग किसे कहते हैं और उसका काम क्या है? बुजुर्ग फारसी लफ्ज़ (शब्द) है इस के मअना हैं बड़ा, पस सब से बड़ा तो अल्लाह है, हम सब कहते हैं अल्लाहु अक्बर (अल्लाह सबसे बड़ा) लेकिन यहाँ बुजुर्ग से मुराद है आम लोगों से मरतबे में बड़ा अल्लाह वाला, अल्लाह का वली।

मअलूम होना चाहिये कि जो अल्लाह और उसके नबी पर ईमान ले आया वह अल्लाह का वली है लेकिन ईमान में जो जितना पक्का हुआ, हर हाल में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत की, अल्लाह का तक्वा इख्तियार किया उतना ही वह बड़ा बुज़र्ग हो गया, वलायते खास्सा से नवाजा गया अल्लाह के नजदीक तुम में सब से जियादा मुकर्रम वह है जो सब से जियादा तक्वे वाला (हर हाल में अल्लाह से डरते हुए उस का लिहाज करने वाला) है। "अला इन्न औलियल्लाहि ला खौफुन् अलैहिम् व ला हुम यहज़नून अल्लजीन आमनू व कानू यत्तकून।" सुन लो अल्लाह के वलियों के लिये न कोई खौफ है न वह रंजीदा होगें, वह, वह हैं जो ईमान लाए और अल्लाह का तक्वा इख्तियार किया।

खूब समझ लेना चाहिये कि सारी मखलूक़ में सबसे जियादा मुत्तकी (अल्लाह से डरने वाले और अललाह का लिहाज़ करने वाले अफजलुल बशर, अशरफुल मखलूकात हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं बस आप की पैरवी और आप के इतिबाअ़ के अलावा में तक्वा नहीं इसी लिये तो बताया गया कि "तुम्हारे लिये उस्वतुन हसना अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।" (33:21) और फरमाया गया कि "आप कह दीजिये कि अगर तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरा इत्तिबाअ़ करो तो अल्लाह के महबूब हो जाओगे और तुम्हारे गुनाह भी बख्श दिये जाएंगे।" (3:31) पस अल्लहा के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान, आप की महब्बत व इताअत में जो अहम काम है वह अल्लाह पर वैसे ईमान लाना जैसे हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तअलीम फरमाया और अल्लाह से महब्बत "वल्लज़ीन आमनू अशददु हुब्बन् लिल्लाह" (2:165) और जो ईमान वाले हैं वह अल्लाह की महब्बत में अशदद होते हैं अर्थात वह अल्लाह से बहुत जियादा महब्बत रखते हैं। ऐसे लोग अल्लाह की मर्ज़ीके खिलाफ़ कुछ नहीं करते और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए तरीके पर अल्लाह की याद और उस की इबादत में लगे रहते हैं कि "जिन्न व इन्स की तख्लीक ही अल्लाह की इबादत के लिये हुई है।(51:56) अल्लाह के रसूल की पैरवी में अल्लाह का दीन लोगों तक पहुंचाना और अल्लाह से जोड़ना भी है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया कि एक बात भी हम से सीखो तो उसे दूसरों को भी सिखाओ "बल्लिगू अन्नी व लौआयः"

किसी अल्लाह वाले का काम यह हरगिज़ नहीं है कि वह अल्लाह से काट कर अपने से जोड़े और अल्लाह के रसूल सल्ललाहु अलैहि व सल्लम के तरीके के सिवा कोई अपना तरीक़ा निकाल कर उस पर चलने की दअ़वत दे, " किसी बशर का यह काम नहीं कि अल्लाह तआला उस को किताब दे और सहीह इल्म व फहम अता फरमाए और नुबुव्वत इनायत करे फिर वह लोगों से यूं कहे कि तुम खुदा को छोड़ कर मेरे बन्दे बन जाओ (3:79) पस जब नबी को इसकी इजाजत नहीं कि वह खुदा के बन्दो को अपना बन्दा बनाए तो वली को कैसे यह इख्तियार मिल सकता है और किसी वली ने ऐसा किया भी नहीं है। पस वली वह है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इत्तिबाअ़ में अल्लाह का तक्वा इख्तियार करे और अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से जोड़े यअ़नी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए दीन को दूसरों तक पहुचाए और अल्लाह का दीन बरपा करे ऐसे वली से महब्बत करना उस से दीन सीखना, उस की सुहबत से फाइदा उठाना बेहद जरूरी है। ऐसे औलियाउल्लाह से बुग्ज़ व अदावत रखना अपनी आकिबत खराब करना और अल्लाह को नाराज़ करना है। रही बात बुजुर्ग के इन्तिकाल के बअ़द उनकी कब्र के साथ मुसलमानों का अमल तो किसी हदीस में किसी की कब्र पुख्ता करने का न कोई इशारा है, न उसे गिलाफ़ पहनाने का न चढ़ावा चढ़ाने का न उन से हाजत तलब करने का न नज्र व मिन्नत का लिहाजा यह सारे काम गैर इस्लामी हैं और इन्नमल अअमालु बिन्नीयात बअ़ज तो इन में से शिर्क तक पहुंचाने वाले हैं, लिहाजा इन सारे कामों से बचना चाहिये अलबत्ता बुजुर्ग से महब्बत करें और जिस तरह उन का नाम लेते वक्त रहमतुल्लाहि अलैहि कह कर दुआ करते हैं वैसे ही उन केलिये मगफिरत की दुआ करें उनकी कब्र पर हाजिर हो तो मस्नून सलाम "अस्सलाम अलैकुम या अहल कुबूरिल मुसलिमीन अन्तुम लना सलफुन व नहनु लकुम तबअून व इन्ना इनशाअल्लाहु बिकुम लाहिकून। पढ़ें।

❑❑

भारत का संक्षिप्त इतिहास.....

और वास्तव में यहां के अमीर अपनी अपनी सत्ता के लिए दिन रात लड़ते रहते थे। 1572 ई0 (980 हि0) में एतमाद खां ने जो मुज्जफ़्फर का मंत्री था अपनी सत्ता को जाते देखा तो अकबर को गुजरात आने की दावत दी और अकबर के पहुंचने पर अपने मालिक मुज्जफ़्फर शाह और सारे गुजरात को अकबर के हवाले कर दिया। अकबर गुजरात की बड़ी दौलत और दो सौ वर्षों का जमा किया हुआ पुस्तकालय ले कर दिल्ली वापस आया।

बिहार और बंगाल अब तक पठानों के हाथों मे था। अकबर ने 1575 ई0 (983 हि0) में बिहार फतह किया फिर बिहार के हाकिमों ने धीरे धीरे पूरे बंगाल पर कब्जा कर लिया। 1560 ई0 (995 हि0) में कशमीर को अपने राज्य में शामिल कर लिया। यूसुफ़ जई पठानों का दमन भी इसी साल हुआ और इसी लड़ाई में अकबर का मशहूर दरबारी बीरबल मारा गया। 1591 ई0 (1004 हि0) में क़न्धार और सिन्ध दोनों अकबरी राज्य में दाखिल हुए।

1595 ई. (1004 हि.) में बरार 1600 ई. (1009 हि.) में खान्देश और अहमद नगर का कुछ भाग भी सल्तनत मुग़लिया में शामिल हो गया। इस प्रकार अकबर के ज़माने में हिन्दुस्तान का संयुक्त राज्य फिर काइम हुआ।

अकबर का 63 वर्ष की उम्र में 39 वर्ष राज्य करके 1605 ई. (1014 हि.) में देहान्त हो गया

अकबर बड़ा बुद्धिमान, (एतदाल पसन्द) बादशाह था। अपने शिक्षक मुलला पीर मुहम्मद और मुल्ला अब्दुल लतीफ़ से लिखना पढ़ना यद्यपि मामूली तौर पर सीखा था परन्तु अपनी बद्धिमानी से कठिन बातों के बारे में सही राय काइम करता था। आखिरी उम्र में अगरचः धार्मिक विचारों में बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका था परन्तु राज्य और युद्ध व्यवस्था ऐसे अच्छी स्थापित की कि हिन्दुस्तान मे कोई सरकश ऐसा नहीं था जो उसकी बराबरी का दावा करता बन्दोबस्त मालगुजारी के बेहतरीन कानून यद्यपि शेर शाह के ज़माने से ही शुरू हो गये थे मगर एसे बड़े राज्य में सही तौर पर उन को लागू करना वास्तव में अकबर के जमाने में पूरा हुआ।

अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी

युवा वर्ग के लिये कैरियर

सिविल सर्विसेज़ में जाने का अवसर

प्रस्तुति : एम0 हसन अंसारी

सिविल सर्विसेज के इम्तेहान में पास होकर लोक सेवा की लालसा मेघावी छात्र छात्राओं में हमेशा रही है। इस इम्तेहान को कराने और उम्मीदवारों में से आवश्यकतानुसार युवा–युवतियों के चयन की ज़िम्मेदारी यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन, दिल्ली की हैं। इस इम्तेहान के जरिये : प्रशासन, पुलिस, फारेन सर्विस, रेवन्यू, आबकारी आदि की कुल तेईस सर्विसेज के लिये चयन किया जाता है। फार्म जमा करने की अन्तिम तिथि 5 जनवरी थी। समझा जाता है कि इम्तेहान में शामिल होने के लिये इच्छुक उम्मीदवारों ने फार्म भर कर जमा कर दिये होंगे।

चयन के दौरान उम्मीदवारों को विशेषकर तीन पहलुओं पर परखा जाता है– सामान्य ज्ञान, विश्लेषण की क्षमता, किसी इशू (प्रकरण) का हल निकालने की योग्यता। अत्यधिक तनाव और दबाव की हालत में भी ठँडे दिल से काम करने की सलाहियत आदि। इन सब की जाँच के लिये तीन स्तरीय जाँच परख की व्यवस्था है– प्री प्ररीक्षा, मेन परीक्षा और इन्टरव्यू।

प्री इम्तेहान सिविल सर्विसेज परीक्षा 2009 की प्री परीक्षा 17 मई 2009 को होगी। उम्मीदवार को मेन इम्तेहान में शामिल होने के लिये इस इम्तेहान में पास होना ज़रूरी है। प्री परीक्षा के दो पर्चे होते हैं – एक ऐच्छिक (आपशनल) विषय का दूसरा जनरल नालेज का। प्रश्न वस्तुनिष्ठ (आबजेक्टिव) होते हैं। सन् 2007 से इस में ऋणात्मक (निगेटिव) मार्किगं की व्यवस्था है। एक गलत जवाब के लिये प्रश्न के निर्धारित अंकों का एक तिहाई काटा जाता है। इस लिये उन्हीं प्रश्नों के उत्तर लिखने की कोशिश करें जिन्हें अच्छी तरह जानते हों।

सामान्य ज्ञान के प्रश्न पत्र के छः हिस्से होते हैं– जनरल साइंस, राष्ट्रीय आन्दोलन, विश्व और भारत का भूगोल, भारतीय राजनीति व अर्थव्यवस्था और सामान्य तर्क शाक्ति व बौद्धिक येग्यता व क्षमता।

ऐच्छिक विषय जिसका पूर्णांक 300 होता है, सामान्य ज्ञान के पूर्णांक 150, जो जनरल स्टडी से सम्बन्धित होते हैं, मेन इम्तेहान के लिये महत्वपूर्ण रोल अदा करते हैं।

मेन इम्तेहान मेन इम्तेहान की तारीख का ऐलान बाद में होगा। इस में वही उम्मीदवार सम्मिलित हो पायेंगे जो प्री इम्तेहान में पास होंगे। मेन इम्तेहान में दो तरह के पर्चे शामिल होते हैं– महत्वपूर्ण और सामान्य। सामान्य में एक पर्चा अंग्रेजी का है और दूसरा संविधान की आठवीं सूची में दर्ज भाषाओं में से अभ्यर्थी द्वारा चयनित कोई एक भाषा। महत्वपूर्ण पर्चों के तीन ग्रुप हैं। आपशनल विषय पूर्णांक 1200, निबन्ध लेखन पूर्णांक 200 और जनरल नालेज पूर्णांक 600।

तैयारी यदि कामयाबी की चोटी पर पहुँचना है तो तैयारी सब से निचली सतह से शुरू करनी होगी। सब से पहले कोर्स को भली प्रकार समझें। हर पर्चे की तैयारी उसके महत्त्व को ध्यान में रख कर करें। समय की पाबन्दी जरूरी है। तैयारी के लिये एन सी इ आर टी की किताबें सब से अच्छी हैं।

प्री इम्तेहान में आप को प्रश्नों के कई उत्तरों में से एक सही उत्तर को चुनना होता है जब कि मेन इम्तेहान में इन के सिलसिले में अपने विचारों को भी व्यक्त करना होता है।

एन सी इ आर टी की किताबों के अलावा "इण्डिया इयर बुक" "सी एस आर इयर बुक" और "मनोरमा इयर बुक" जैसी उच्च कोटि की किताबों का अध्ययन करना चाहिये। जनरल स्टडी के विभिन्न विषयों की स्नातक स्तर की किताबों का अध्ययन करना चाहिये। ऐच्छिक विषय को उचित महत्व अवश्य दें।

अपने हालात को सामने रखते हुए और अपने कमजोर व मजबूत पहलुओं पर ध्यान देते हुए आत्म विश्वास के साथ लगातार तैयारी करें। मेन इम्तेहान और इन्टरव्यू के लिये किसी माहिर और अनुभवी व्यक्ति का मार्गदर्शन (रहनुमाई) अवश्य हासिल करें।

इक्सिवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

— सै0 अबूज़फ़र नदवी

हनूर का राज्य

पश्चिमी घाट का एक छोटा सा राज्य "हनूर" बहुत ही कम समय समाप्त हो गया। हूनर को आज कल हूनर कहते है। और जो अब बम्बई क्षेत्र में उत्तरी कनटरा के जिले में एक तहसील का मुख्यालय है। आठवीं सदी हिजरी के बीच में यह नगर समुद्र से आधमील को दूरी पर एक बड़ी खाड़ी पर स्थित था अरब व्यापारियों के आने जाने से वहां बड़ी रौनक थी। उस ज़माने में यहां जमालुद्दीन मुहम्मद बिन हसन ने अपना राज्य क़ाइम किया। इस का बाप हसन नाख़ुदा एक जहाज़ चालक था। उस के बेटे ने अपनी शक्ति से एक राज्य की बुनियाद डाली जो एक हिन्दू राजा हरिहर द्वितीय के अधीन था। सुलतान के पास छः हज़ार फौज और बहुत से जंगी जहाज़ थे। यहां के रहने वाले अधिकतर शाफ़ई धर्म के थे। उसके करीब ही सिन्दापुर में जिस का मशहूर नाम गोवा है एक हिन्दू राज्य था। उसके राजा और उसके बेटे में किसी कारण विरोध हो गया। बेटे ने सुल्तान को लिखा कि अगर उसकी सहायता की जाये तो वह मुसलमान होने को तैयार है। सुल्तान ने कहा अगर वह मुसलमान हो जायेगा तो वह अपनी बहन से उसकी शादी कर देगा। इस क़रार के अनुसार सुल्तान ने बावन जंगी जहाज़ों से सिन्दापुर पर हमला किया और विजय प्राप्त की। इस विजय पर अभी कुछ ही महीने गुज़रे थे कि राजा ने आकर हमला किया सुल्तान की फौज बेखबर थी। और मुकाबला न कर सकी और वह बुरी तरह घिर गया और इसी में तबाह हो गया उसका समुद्री बेड़ा काफी शक्तिशाली था इसलिए मालबार के बाज़ राजा उसके अधीन हो गये। उसकी सेना उस ज़माने के नये जंगी सामान से लैस रहती। मिनजीक़ का प्रयोग होता विशेष प्रकार के जंगी जहाज़ तैयार कराए गये थे ताकि उसके अन्दर ही फौज हथियार बन्द होकर और घोड़े पर सवाह जहाज़ से उतरते ही हमला कर सके।

शिक्षा की चर्चा जैसी इस राज्य में थी दक्षिणी भारत के दूसरे शहरों में न थी। केवल हुनूर में 13 मदरसे लड़कियों के और 23 लड़कों के चल रहे थे। यहां की अधिक तर लड़कियां हाफिज़े कुर्आन होतीं। आलिम और फाज़िल भी यहां बहूत थे। शहरों में काज़ी और मस्जिदों में प्रसिद्धि आलिम वक्ता होते। बड़े बड़े फक़ीह (शरअी कानून दां) दरबार में हाज़िर रहते। कई खानकाहें बनी हुई थीं और कृषि की तरफ़ उन लोगों की रूचि न थी। नदी के किनारे होने के कारण व्यापार से अधिक लाभ उठाते।

बादशाह रेशम और कतां का प्रयोग करता और बाहर जाते समय दूबा और इमामा भी सिर पर रखलेता। औरतें केवल साड़ियां बान्धती थीं जो रेशम की होतीं और नाकों में बुलाक इस्तेमाल करतीं। औरत और मर्द दोनों बाल रखते। बादशाह जब बाहर निकलता तो उसके आगे आगे नक़्क़ारा और तबल बजता।

मुसलमानों का प्रभाव हिन्दुओं पर अधिकतर धार्मिक जंगी और नैतिक (अखलाक़ी) था। युद्ध कला में हिन्दु मुसलमानों का अनूकरण (पैरवी) करते। थल और समुद्री सेना में बड़े बड़े अफ़सर मुसलमान रखे जाते थे। उसके अतिरिक्त आम फ़ौजी भरती में भी मुसलमानों की संख्या काफी थी। लेकिन आर्थिक क्षेत्र में मुसलमान हिन्दुओं से प्रभावित थे। चावल, खटाई और गरम पानी का प्रयोग आम था हालांकि व्यापारिक गरम बाजारी के कारण विदेशों से गेहूं आ सकता था। खाने का ढंग भी आधा हिन्दुआना था। अलग अलग बरतनों में खाते और नौकरानियां चमचे से हर एक को अलग अलग थाल में खाना देतीं। थाल ही में चावल के साथ हर प्रकार का सालन रख देतीं जैसा कि आज भी हिन्दुओं के यहां यह तरीका मौजूद है।

हिन्दुओं में ब्राहमण और गैर ब्राहमण का अन्तर उस समय भी था। छूत छात का रिवाज इस समय

से अधिक उस समय था। जनमानस पत्ता पर खाते या पीतल के बरतनों में। राजा और बादशाह सोने चान्दी के बरतन भी प्रयोग करते। आज की तरह उस जमाने में भी मुसलमानों को घरों में जाने न देते और न उनके साथ खाते पीते न अपने बरतनों में खाने देते। मगर आम तौर से मुसलमनों के साथ अच्छा व्यवहार करते। अधिकतर लोग बुद्ध, जैनी और शिव के पुजारी थे। मुसलमानों में अधिक संख्या शाफ़ीयों की थी।

तैमूर का खानदान

हिमायूं की वापसी :– हिमायूं जब हिन्दुस्तान से ईरान पहुंचा तो ईरान के बादशाह ने उस को बड़ा सहारा दिया। हिमायूं कुछ दिनों वहां रहा 1545 ई0 (952 हि0) में वह ईरान से चौदह हजार फौज लेकर क़न्धार पहुंचा फिर बदरूनशा, काबुल और ससितान के क़ब्ज़े में दस वर्ष गुजर गये। आखिर 1554 ई0 (962 हि0) में सब भाइयों की तरफ से इतमिनान हो गया तो पन्द्रह हजार सवारों से लाहोर पर विजय प्राप्त की और सरहिन्द के पास खुद सिकन्दर को भी प्राजित किया।

अब हिमायूं दिल्ली और आगरा का मालिक बन गया लेकिन सिकन्दर सूर दोबाराजंगी तैयारी में लग गया था इसलिए अकबर को उसके शिक्षक बैरम खां के साथ पंजाब से सिकन्दर सूर को निकालने के लिए भेजा। अकबर इसी उधेड़ बुन में था कि 1555 ई0 (963 हि0) में हिमायूं का दिल्ली में देहान्त हो गया।

अकबर बादशाह की तख्त नशीनी :– अकबर उस समय 13 वर्ष नौमहीने का था। मुग़लों ने कलाटूर में उस के सिर पर हिन्दुस्तान की बादशाही का ताज रख दिया। जलालुद्दीन उसकी शाही पदवी हुई। बैरम खां जो खनखाना के नाम से मशहूर है, हिमायूं के उन मित्रों में था जिन्हों ने हर हाल में उस का साथ दिया और इस नौजवान बादशाह का सालार और शिक्षक नियुक्ति हुआ। अकबर कलानूर ही में था कि बादशाह के मरने के बाद आगरा और दिल्ली के मुग़ल हाकिम हेमू बक्काल से प्रजित होकर यहां मिले। खान खाना अब अपनी मुग़ल फौज को लेकर दिल्ली की तरफ बढ़ा। उधर हेमू बक्काल भी अकबर को पंजाब से निकालने के लिए चल खड़ा हुआ। दोनों का मुकाबला 2 मोहरम्म 924 हि0 (1556 ई0) को पानीपत के मैदान में हुआ। हेमू बक्काल गिरिफ्तार होकर मारा गया और दिल्ली पर अकबर का क़ब्जा हो गया। हिमू बककाल की प्राजय को सुन कर सिकन्दर शाह सूरी ने जो पहाड़ों में छुपा हुआ अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, पंजाब में उपद्रव मचाया आखिर कई महीनों तक मुग़ल फौजों से घिरे हुए रह कर इस शर्त पर हथियार डाल दिया कि उस को बंगाल से निकल जाने दिया जाए।

खानखाना में जंगी योग्यता के अतिरिक्त, अवसर से लाभ उठाने का बड़ा जौहर था लेकिन दरबारी उस की कठोरता से घबरा गये। जब दो तीन सरदारों को उस के आदेश से कत्ल कर दिया गया और अकबर के अध्यापक मुल्ला पीर मुहम्मद को हज के बहाने मुल्क से निकाल दिया तो खुद अकबर भी नाराज होकर दिल्ली चला आया। खानखाना ने आगरा में बहुत दिनों तक अकबर की रजामन्दी का इंतिजार किया मगर जब देखा कि बात बनती नजर नहीं आती तो विद्रोह पर आमादा हो गया। शाही फौजों ने उसको इतना तंग किया कि आखिर माफ़ी मांग कर हज के इरादे से गुजरात चला आया। पटन में खान सरवर के तालाब पर था कि एक पठान ने जिसके बाप को खानखाना ने किसी जमाने में मारडाला था, कत्ल कर डाला।

अब अकबर सलतनत की असली कठिनायों से अवगत हुआ। पंजाब पर हकीम मिर्जा ने हमला किया तथा मालवा में ऊदहम खां ने जाकर स्वाधीनता का सपना देखना शुरू किया। उधर खान जमां जौन पुर से बढ़कर अवध और कन्नौज पर काबिज हो गया लेकिन इस पक्के इरादे वाले नौजवान बादशाह ने हर जगह खुद पहुंच कर बागियों का खातमा किया। जब उस से छुट्टी मिली तो चित्तौड़ पर हमला किया और राजा जयमल को अपनी बन्दूक से मार कर उसके मज़बूत किले को फतह कर लिया।

इसके बाद गुजरात की नौबत आई जहां नाम मात्र मुज्जफ़्फर शाह तृत्तीय की हुकूमत थी

शेष पृष्ठ 33 पर

इस्लाम में लोकतन्त्र

लेखक : **उबैदुर्रहमान नदवी** अनुवादक : **इदारतउल्ला खाँ**

इस्लाम में न्याय, समानता, सद्व्योहार, सदाचार, सहिष्णुता, सहनशीलता, सहानुभूति, सच्चाई, ईमानदारी, भाईचारा, बन्धुत्व, संजनता, दानशीलता, स्वंच्छता, शुद्धता, अध्यात्म, ज्ञान तथा इसी प्रकार के अन्य सामाजिक सद्गुणों पर अत्याधिक बल ही नहीं बल्कि अनिवार्यता प्रदान करता है। इस्लाम की सबसे बड़ी विशेषता और खूबी यह है कि वह इन सभी गुणों को एक उचित स्थान तथा मान्यता प्रदान करता है। इस्लाम का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य, ऐसे समाज तथा वातावरण की स्थापना है जिसमें मनुष्य शान्ति तथा निस्तब्धतापूर्वक, बिना किसी प्रकार के जाति, धर्म, रंग अथवा रीजिनलिज़्म पर आधारित भेद–भाव के बिना जीवन यापन कर सके, रह सके। इस्लाम के अनुरूप मनुष्य की सृष्टि का स्त्रोत एक है। उनका गिरोह तथा राष्ट्र में बँट जाना उनकी केवल पहचान मात्र है जिसे कुरान स्वतः प्रसारित करता है– "ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरूष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें ब्रादरियों तथा कबीलों का रूप दिया ताकि तुम एक दूसरों को पहचानो (इसलिए नहीं कि तुम एक–दूसरे का तिरस्कार करो), वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुम में सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुम में सबसे अधिक तक़वा वाला संयमी है।" (49 :13) इसीलिए इस्लाम धार्मिक सद्गुणों और विशेषताओं के प्रति ही सहयोग तथा सहायता की घोषणा करता है, बुरे तथा अपवित्र कार्यों के लिए नहीं। पवित्र कुरान कहता है – "हक़ अदा करने और ईश–भय के काम में तुम एक दूसरे का सहयोग करो और हक़ मारने और ज्यादती के काम में एक दूसरे का सहयोग न करो। अल्लाह का डर रखो, निश्चय हो अल्लाह बड़ा कठोर दण्ड देने वाला है।"

ईश–दूत मुहम्मद (सल्ल0) का निम्नलिखित कथन हवाला देने योग्य है। एक बार ईश–दूत ने कहा :– "भाई की सहायता करो चाहे वह उत्पीड़ित हो या अत्याचारी।" आप के सहाबा ने पूछा "भाई यदि अत्याचारी है तो हम उसकी सहायता कैसे कर सकते हैं? ईश–दूत ने फरमाया, "उसको अत्याचार से रोको।" अबूमूसा के कथानुसार : "कुछ लोगों ने ईश–दूत (स0) से पूछा, "किस का इस्लाम सबसे अच्छा है" अर्थात् (कौन सबसे अच्छा मुसलमान है) आप (स0) ने फरमाया, "वह जो मुसलमानों को अपनी जुबान या हाथ से (नुकसान या) चोट पहुँचाने से रोकता है।"

अन्स के कथानुसार ईश–दूत (स0) ने कहा "तुम में से कोई भी उस समय तक ईमान वाला नहीं जब तक कि वह जो कुछ अपने लिये चाहता है, वहीं दूसरे मुसलमान भाई के लिये चाहे।" ईश–दूत का कथन है," वह सच्चा मुस्लिम नहीं जो अपना पेट भर खाता है और उसका पडोसी भूखा रहता है।" आप ने फिर कहा, "मुहाजिर वह है जो बुराइयों का त्याग करता है और उससे दूर रहता है।" ईश–दूत (स0) ने ऐलान किया : "वह जो किसी जिम्मी (गैर मुस्लिम जिसे इंस्लामी हुकूमत में शरण दी गई हो) को चोट पहुँचाता है, मुझे चोट पहुँचाता है और जिसने मुझे चोट पहुँचाया उसने ईश्वर को नाराज़ किया।" आप (स0) का यह भी कथन है, "कियामत के दिन मैं उसका बहिष्कार करूँगा जो एक जिम्मी का उत्पीड़न करता है या उसके सामर्श्य से अधिक का कर्तव्यभार उस पर डालता है, या उससे उसकी कोई चीज़ छीन लेता है।"

ईश–दूत (स0) के ऊपर लिखे कथनों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उनका धर्मसन्देश केवल मनुष्य मात्र की मर्यादा का नैतिक उत्थान तथा शान्ति एंव बन्धुत्व का वातावरण सारे विश्व में स्थापित करना था। ध्यान रहे कि इस्लाम ही वह पहला

धर्म है जिसने समान नागरिकता को परिभाषित किया तथा "अनेकता में एकता" के सिद्धान्त पर समाज की रचना की।

उस समय जब आप (स0) मदीना में व्यवस्थापित हुए, एक ऐसे समुदाय की रचना की जिसमें मुस्लिम, अरब के मूलनिवासी, यहुदी और ईसाई सभी एक करार के द्वारा सुसंगठित तथा एक सूत्र में बँधे हुए थे।

बाद के दिनों में जहाँ कहीं भी इस्लाम फैला वहाँ के मुस्लिम शासकों ने भी इसी सिद्धान्त को जीवित रखा और उनका इस ओर सदैव झुकाव रहा। इसी प्रकार स्पेन पर मुसलमानों का राज आठ सौ वर्षों से भी अधिक समय तक रहा परन्तु उस सम्पूर्ण काल में कोई जबरन धर्म–परिवर्तन की कोई एक भी मिसाल नहीं मिलती। इस प्रकार यह कहना आवश्यक न होगा कि शुरू से ही इस्लाम दूसरे सभी धर्मों से अधिक सहनशील तथा उदारवादी रहा है।"

मौलाना सैयद अबुलहसन अली नदवी कहते है :– "इस्लाम द्वारा निर्मित मानव बन्धुत्व इस प्रकार का है कि उस पर किसी प्रकार के जातिवाद, सम्प्रदाएवाद अथवा अलगाववाद का कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता चाहे वह भाषा से सम्बन्धित हो या इतिहास, या रीति रिवाज पर आधिरित हो या यहाँ तक कि कट्टरपंथी ही क्यों न हो। विभिन्न जातियों तथा राष्ट्रों को एक सूत्र में बाँधने की इस्लाम की शाक्ति का लोहा दुनिया मानती है। इस्लाम ही वह पहला धर्म है जिसने प्रजातन्त्र का उपदेश दिया।"

एक जाने माने ओरंटियलिस्ट (पूर्ववादी) ने ठीक ही कहा है–" लेकिन इस्लाम को इससे बढ़कर मनुष्यमात्र की सेवा करनी थी..... सभी को और मनुष्य को तमाम जातियों को समानता के आधार पर एकत्रित करने का जो काम इस्लाम ने किया है, ऐसा कार्य किसी भी समाज के इतिहास में नहीं मिलता। अफरीका, भारत तथा इंडोनेशिया जो मुस्लिम प्रधान देश है और शायद वह देश जैसे जापान जहाँ मुसलमान थोड़ी संख्या में है इन सबको देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जाति तथा रूढ़िवादी विचारो के न सुलझने वाले मामलों को सुलझाने की शाक्ति आज भी इस्लाम में मौजूद है। जब भी कभी पूरब और पश्चिम की सामाजिक भिन्नताओं को समाप्त करके उन्हें एक करने का प्रयास किया जायेगा तो यह कार्य बिना इस्लाम को माध्यम बनाये संभव न होगा।"(Whilher Islam Page 379)

इसी प्रकार का विचार भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी एंव कवियत्री श्रीमती सरोजिनी नाइडो ने भी व्यक्त किया है। उन्होंने कहा –"इस्लाम पहला धर्म है जिसने प्रजातन्त्र का उपदेश दिया और उसे कार्य रूप में परिणीत किया, जैसे ही मस्जिदों के मीनारों से अजान की आवाज सुनाई देती है तमाम नमाजी एकत्रित हो जाते हैं और इस प्रकार की प्रजातान्त्रिक प्रक्रिया दिन में पाँच बार होती है जिसमें एक देहाती किसान और राजा सभी साथ साथ खडे होकर नमाज पढ़ते हैं और कहते है–"केवल ईश्वर ही महान है।" इस्लाम की इस अकाट्य एकता को देखकर मुझे आश्चर्य होता है कि इस्लाम किस प्रकार मनुष्यों को एक दूसरे का भाई बना देता है।" (Speeches and writing of Sarojini Naido P.169)

संक्षेप में यदि हम इस्लाम का अध्ययन करें और जो सेवाये उसने मनुष्यों को प्रदान की है उन पर विचार करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँगे कि जो भी संभ्रतियाँ आज इस्लाम के विरूद्ध फैली है वह सर्वथा निराधार हैं। बस इतना ही कह देना काफी है कि ईश्वर ने स्वंय ही कहा है–"ऐ मुहम्मद! लोगों से कह दो "तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये और मेरे लिये मेरा।" (109:6) यही कारण है कि ईश दूत ने कभी भी यहूदियों, ईसाईयों या किसी को भी इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं किय। पवित्र कुरान कहता है– "धर्म के विषय में कोई जबरदस्ती नहीं। (2:256)

(आई सी एल न्यूज लेटर मई 2008 से सामार)

❑❑

तपता (अलाव)

– मुहम्मद दानिश अन्सारी

सर्दियों में गरीब सर्दी से बचने के लिए तपता जलाते हैं। तपता सूखी पत्तियां घास फूस, लकड़ी सूखी या गीली जो भी नसीब हो जला कर लहकाया जाता है। तपता का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव विकास की सभ्यता का इतिहास। जब इन्सानी सभ्यता अपनी प्रारम्भिक अवस्था में थी तो जंगलों में बसने वाला इंसान तपता इसलिए भी जलाता था कि जंगली जानवरों से अपनी रक्षा कर सके, इसी यथार्थ से स्काउट एण्ड गाइड के साथ कैमफायर की शब्दावली जुड़ी हुई है तपता जन समुदाय को जोड़ता है यह जन समुदाय एक परिवार का हो सकता है, मुहल्ले का हो सकता है, राहगीरों का हो सकता है, राजाओं और राजनीतिज्ञों का हो सकता है, साहित्यकारों और विचारकों का हो सकता है, कमलकारों, शायरों और कवियों का हो सकता है। घर के बाहर हो सकता है, घर के अन्दर हो सकता है, महलों और अट्टालिकाओं में हो सकता है जलयानों वायुयानों बसों और ट्रेनों का हो सकता है। गरज़ कि इन्सान जहाँ भी हो अकेले हो दुकेले हो तपता के वजूद से इन्कार नहीं किया जा सकता यह और बात है कि अलग–अलग समय स्थिति और स्करुप के लिहाज से इनके नाम अलग अलग हैं। कोई अंगेठी कहता है तो कोई हीटर कोई अलाव कहता हैं तो कोई ए0 सी0 कश्मीर की कागड़ी नेपाल की सी गड़ी उत्तरी भारत की अँगेठी तपता के ही परिष्कृत (रिफाइन्ड) रुप हैं। इन सब का काम गरमाहट पहुँचाना है।

आधुनिक सभ्यता में तपता का नाम मिटता सा जा रहा है नई पीढ़ी के वही लोग तपता से वाकिफ रह गये हैं जिन्हें सर्दियों में तन ढकने के लिए पूरे कपड़े नसीब नहीं हैं। देहातों में भी अब तपते का चलन न के बराबर रह गया है कारण यह है कि लोगो के रहन सहन का स्तर बढ़ा है ऊपर उठा है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालो के सर्वेक्षण का एक आधार यदि तपता मान लिया जाये तो पूरा हिन्दुस्तान बी0पी0एल0 से ऊपर ही मिलेगा। नीचे वालों को चिराग लेकर ढूँढना पड़ सकता है।

तपता की एक नहीं अनेक उपादेयता (यूटीलिटी) है। तपता दिलों को जोड़ता है दूरियाँ कम करता है। बेफिक्री के अवसर प्रदान करता है, हंसी मजाक में कड़वी कसैली बातों को भूल जाने का मौका देता है। समाज में समता और समरसता का कारक बनता है। सर्दियों की लम्बी रातों में समय बिताने का इससे अच्छा साधन क्या हो सकता है। तपता के सहारे राजनीति की, साहित्य की, समाज की, सहयोग और सहनशीलता की, साम्राज्य और अराजकता की, शान्ति और प्रेम की, अशान्ति, अत्याचार और अनाचार की, कितनी ही गुत्थियाँ सुलझाई जा सकती हैं।

तपता से खाना भी पकाया जाता है मगर ग़रीबों का। तपता में भुनी हुई गंजी (शकरकन्द) और आलू का स्वाद कुछ और ही होता है दूध गर्म कर लेना पानी गर्म कर लेना बच्चों को मालिश करने के लिए तेल गर्म करने का साधन भी तपता है।

तपता और किस्से कहानियों का चोली दामन का साथ है। क्या अजब कि "अरेबियन नाइट्स" की कुछ कहानियाँ तपता के सहारे लिखी गई हों। तपता स्वंय तप कर दूसरों को सुख पहुँचाने की सीख देता है।

अलाव तपते का एक बड़ा रुप है। सर्दी में शीतलहरी के दिनों में जगह जगह सरकार और कुछ उदार प्रवृत्ति वाले धर्माथ लोगों द्वारा अलाव लगाये जाते हैं। यह अलाव गरीबों की ठिठुरन को दूर, कम मगर सरकारी अमले की जेबों को अधिक गर्म करने के साधन बनते हैं अलाव का एक रुप वह भी है जो होलिका के दहन और हज़रत इब्राहीम को आग में डाल कर मार उालने के लिए अपने–अपने समय की अत्याचारियों द्वारा तैयार किया गया था। आग है, लेकिन खुदा के हुक्म के ताबे है।

शेष पृष्ठ 29

अंतरराष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुइद अशरफ

इस्लामी बैंकिग की लोकप्रियता : इस्लामी बैंकिंग दिन प्रति दिन संसार में लोकप्रिय होती जा रही है। इस का अनुमान इस बात से लगया जा सकता है कि पिछले एक वर्ष से इस्लामी वित्तीय संस्थाओं (मालियाती इदारों) की पूंजी 35 प्रतिशत से बढ़कर 600 अरब डालर तक पहुंच गई है। यह सूचना सऊदी अरब के प्रमुख व्यापारी सालेह कामिल ने दी है जिन्हों ने इस्लामी बैंकिंग के विकास में प्रमुख भूमिका निभाई है। मिस्टर कामिल ने इस्लामिक डेवलप्मेंट बैंक के बोर्ड आफ़ गवर्नर्स की कानफ्रेंस को सम्बोधित करते हुए कहा कि पूरी दुनिया में इस समय लगभग 470 इस्लामिक बैंक काम कर रहे है। बैंकिंग की यह व्यवस्था जिसे व्यवहारिक नहीं समझाजाता था अब बड़ी लोकप्रियता प्रापत कर रही है और इस को प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री और बैंकर्स स्वीकार कर चुके हैं। मिस्टर कामिल ने अपनी तकरीर में यह भी स्पष्ट किया कि इस्लामी बैंकिंग की लोक प्रियता के साथ साथ उसे नयी चुनौतियां का भी सामना करंना पड़ रहा है। उनहों ने कहा कि इस इस्लामिक बैंकिंग सेक्टर में 3 लाख से अधिक लोग काम कर रहे हैं और उनमें से बहुत से लोगों को शरीअत के बारे में अधिक जानकारी भी नहीं है क्योंकि यह वह लोग है जो प्रचलित बैंकिंग व्यवस्था जानकारी रखते हैं।

ब्रिटेन में शरअी अदालतों को विशेष अधिकार

पांच शहरों मे नयी अदालतैं सथापित की गई ब्रिटेन में मुसलमानों को सामाजिक समस्याओं के समाधान और दीनी मामिलों की निगरानी के लिए विभिन्न शहरों में शरअी अदालतों को अधिकार दे दिये गये हैं। ब्रिटिश सरकार ने एक रिपोर्ट के अनुसार शरअी अदालतों को इस बात का अधिकार दे दिया है कि वह मुसलमानों के निजी मामलात जैसे निकाह, जायदाद के बटवारे और इसी तरह की समस्याओं के लिए फैसले कर सकती हैं। यह अदालतें लन्दन, बरमिंधम ब्राफोर्ड मैनचिस्टर में काइम की गई हैं। एक समाचार पत्र के अनुसार दो और इस तरह की शरअी अदालतें गलासगो और एडेन बर्ग में खोलने की योजना है। इन अदालतो की तरफ से किये गये फैसलों पर उसी प्रकार अमल होगा जिस प्रकार देश को दूसरी अदालतों के फैसलोंपर हाता है। इन शरअी अदालतों के फैसलों पर इस समय तक अमल नहीं किया जाता था जब तक कि मुसलमानों में सहमत नहीं हो जाती। शरअी अदालतों के ट्रेव्यूनल के सदस्य शैख फैजुल खत्तात सिद्दीकी ने कहा कि उन्हों ने देश के कानून में पाई जाने वाली इस गुजाइश का लाभ उठाया है। कानून की एक धारा के अनुसार शरअी अदालतों के फैसलों को भी लागू करने का अधिकार होता है उन्होंने कहा जब तक मुकदमे के फरीक (पक्ष) शरअी अदालत के फैसलें पर सहमत नहीं हो जायें इस फैसले को लागू नहीं किया जा सकता।

ब्रूसेल्स में पैग़म्बरे इस्लाम का नाम जनसाधरण में सब से अधिक लोक प्रिय :– एक तरफ जहां इस्लाम के दुश्मन इस्लाम और पैगम्बरे इस्लाम की ग़लत छवि दुनिया के सामने पेश करने और असम्मान जनक कारटून बनाते हुए मुसलमानों के ग़म व गुस्सा में बृद्धि कर रहे हैं पैग़म्बरे इस्लाम की लोक प्रियता में कोई कमी नहीं आई है। अल्लाह के वादे के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम कियामत तक बुलन्द रहेगा क्योंकि इस का वादा कुर्आन मजीद में किया गया है। बेलजियम की राजधानी ब्रूसेल्स में 2006 के दौरान पैग़म्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद (सल0) का नाम लोगों में सबसे अधिक लोक प्रिय रहा। सरकारी आंकड़ों के अनुसार राजधानी में 2006 में जितने बच्चे पैदा हुए उनमें से अधिकांश बच्चों के नाम के साथ "मुहम्मद" लगाया गया है। इस तरह "मुहम्मद" नाम माता पिता में अधिक प्रिय रहा। लोक प्रिय नामों की सूची में टापटेन में अमीन, छटे में अय्यूब सातवें में मेहदी और लड़कियों में आयशा तीसरे, यासमीन चौथे और सलमा सातवें नम्बर पर रहे।